धर्मश्री

अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर - २०१८

सिंघल फाउण्डेशन, उदयपुर

॥ भारतात्मा पुरस्कार ॥

'निजानंद' आधारभूमि अरु, 'ज्ञानदेव' की छाया में
किये तपस्या वैदिक बालक, गुरुजी की रखवाली में।
कार्यकरोंने किया परिश्रम, श्रद्धा भक्ति लिये उर में
'सर्वश्रेष्ठ' हुआ विद्यालय, घोषित अब भारतभर में ॥

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल द्वारा आचार्य श्री बालकृष्णजी को 'भीष्म पुरस्कार'

आचार्यद्वय प्रसन्नमुद्रा में

उद्घाटन समारोह

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल द्वारा श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी को 'धर्म सेवा प्रसाद पुरस्कार'

॥ धर्मश्री ॥

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

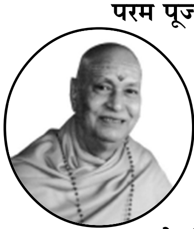

धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट: www.dharmashree.org

वर्ष १७ अंक ४ मार्गशीर्ष-पौष, युगाब्द ५१२० त्रैमास : अक्टूबर-दिसम्बर २०१८

संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
संपादक मंडल :
पं. अशोक पारीक
श्री. गिरीश डागा
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
मुद्रक : **श्री. संजय भंडारे, पुणे**
स्वानंद प्रिंटर्स,
डेक्कन जिमखाना, पुणे – ४११००४
मो. नं.: ९८२३०१४८६२
svbhandare21@gmail.com

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

– संपादक

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. संसार से परमार्थ की ओर कैसे मुड़ें?
९. भरतभूमी के अंग-अंग में वेदों के स्वर गूंजेगे।
११. जीवन में सफलता प्राप्ति के स्वर्णिम सूत्र
१४. श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी (पतंजलि योगपीठ) को भीष्म पुरस्कार
१५. ध्यान में जप का महत्त्व!
१९. सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी को भारतात्मा पुरस्कार
२१. धर्म क्या है?
२२. गायत्रीमंत्र मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है।
२७. मीमांसा शास्त्र के आलोक में गीता दर्शन (२)
२९. विघ्नहर्ता श्री गणेश कथा- एक दृष्टि में
३३. भागवत सप्ताह, कांचीपुरी
३५. समता की मिसाल, गीता परिवार, जयसिंगपुर
३६ से ४०. वेदाध्यापक चिंतन शिविर ४१. आगामी कार्यक्रम
वेद विद्यालय
१८. नृसिंहवाड़ी, २६. विद्यालय प्रवेश सूचना, ३१. गणेश समन्वय आश्रम
३४. पुष्कर

*** आवश्यक सूचना ***

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेदविद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

धर्मश्री के इस अंक के यजमान

श्री. रामनिवासजी गट्टानी (औरगाबाद)

साभिनंदन धन्यवाद!

गीताजी का चिन्तन हमें मृत्यु के भय से छुटकारा दिलाता है। -पूज्यपाद

संपादकीय

आकाश के उस पार भी आकाश है....।

सुनसान बंजर भूमि में वटवृक्ष का एक बीज अंकुरित होता है। घनघोर अंधेरे में एक इकलौता दीपक टिमटिमाने लगता है। तुफानी समंदर में एक इत्तीसी नैया उस पार जाने का ढाढस बांध निकल पडती है। १९९० में श्री क्षेत्र आलंदी में जब महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की स्थापना हुई तो स्थिति कुछ ऐसी ही थी। वेदों को 'विश्वमाता' कहनेवाले स्वयं ज्ञानेश्वर महाराज के कानोंपर वेदों का घोष पडना कठिन था, अन्य क्षेत्रों की बात ही छोडीए! स्वयं प्रतिष्ठान के कुछ न्यासीयों को विश्वास नहीं था कि एकाध वेदविद्यालय चल सकेगा, उसमें लोग अपने बच्चों को अध्ययन हेतु भेजेंगे और उन सबका प्रबंध ठीक से होगा।

परंतु परमपूज्य गुरुदेव की तप:पूत क्रांतदर्शी प्रतिभा से जिस स्वर्णिम भविष्य का साक्षात्कार किया वह वास्तव तथ्य में क्रमश: प्रकट होने लगा और विशेषकर उत्तरी भारत में अस्तित्व के लिए संघर्ष करनेवाली वेदविद्या केवल टिकी ही नहीं तो स्थिरपद हुई, पनपी और परिपूर्णता की असीम दिशा में नये कीर्तिमान् स्थापित करने अग्रसर हो गयी।

गत वर्ष महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के ढालेगांव स्थित श्री समर्थ संत महात्माजी वेदविद्यालयने स्वर्गीय अशोकजी सिंघल की स्मृति में स्थापित 'सर्वोत्कृष्ट वेदविद्यालय' का प्रथम भारतात्मा पुरस्कार प्राप्त किया। लगातार दूसरे वर्ष महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के आद्य वेदविद्यालय, आलंदी स्थित सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय ने भी वही पुरस्कार पर अपनी मुद्रा अंकित की। उल्लेखनीय है कि ये पुरस्कार इस हेतु गठित विशेषज्ञों की समितिद्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर दिए गये। तो यह रही महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की आजतक की मार्गक्रमणा: कार्यारंभ, कार्यविस्तार और फिर उत्कृष्टता का ध्यास।

लेकिन जैसा कहा गया है, परिपूर्णता की मार्गक्रमणा का कोई अंत नहीं होता। अंग्रेजी में कहते हैं, 'Sky is the limit' किंतु आकाश की भी कोई सीमा होती है? जब भी लगे कि हमने उसे छू लिया, तभी प्रतीत होता है कि 'अरे, इससे भी आगे तो आकाश है ही!'

संस्थाओं के कार्य की स्थिति तो और भी जटिल होती है, क्योंकि परिपूर्णता के एक नहीं, कईं आयाम होते है। संख्यात्मक विस्तार तो एक आयाम हुआ, जिसे महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान ने ३४ वेदविद्यालयों के रूप में पर्याप्त रूप में साकार किया। वह तो और भी बढता रहेगा।

कुछ दिन पूर्व ही कोलकाता के श्री गौरांग वेदविद्यालय के प्रांगण में उद्घाटित शांतिदेवी जालान अंतरराष्ट्रीय वैदिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठान के कार्य ने एक नये आयाम की दिशा में मोड लिया है। यह तो सुविख्यात है कि आज महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के वेदविद्यालयों में प्रशिक्षित १००० से भी अधिक वैदिक पंडित पूरे भारतवर्ष में सफलतापूर्वक जीवनयापन कर रहे हैं और दिन-प्रतिदिन उनके लिए माँग भी बढ रही है। किंतु इसी के साथ लाखों की मात्रा में विदेशों में बसे भारतीयों द्वारा भी इच्छे प्रशिक्षित पंडितों की मांग बढ रही है। उसी की आपूर्ति हेतु इस केंद्र का निर्माण हुआ है। उल्लेखनीय है कि इस केंद्र हेतु प्रचुर योगदान भी एक प्रवासी भारतीय श्री. सुधीरजी जालान द्वारा ही प्राप्त हुआ है। धर्मश्री परिवार द्वारा आपका अभिनंदन करते हुए हम इस केंद्र द्वारा वैदिक संस्कृति के वैश्विक विस्तार हेतु प्रार्थना करते हैं।

संसार से परमार्थ की ओर कैसे मुड़ें?

सामान्यत: यह कहा जाता है कि आयु के साथ, हमें धीरे-धीरे अपनी आसक्ति का केंद्र संसार से परमार्थ की ओर उन्मुख कर लेना चाहिए, ताकि इस संसार में रहते हुए हमें स्थाई शांति प्राप्त हो सके। प्रश्न यह है कि कैसे ? जन्म से अब तक बने संबंध, व्यवहार आदि कैसे छूटें, कैसे कम हों? संसार से वैराग्य लेना क्या इतना आसान है? मन है कि उस अदृश्य- जगत् (परमार्थ-जगत्) की ओर जाता ही नहीं; क्योंकि यह उसे पहचानता ही नहीं । प्रस्तुत आलेख में परम पूज्य गुरुदेव ने इसी बिंदु पर हमारा मार्गदर्शन किया है। वे कहते हैं:-

महाभारत के शांति पर्व की एक मूल कथा है, उसी का उदाहरण गोस्वामीजी महाराज ने भी बाद में दिया।

एक बार एक विवेकी वयस्क मत्स्य ने अपने साथियों से कहा, ''देखो जिस तालाब में हम लोग हैं, वह मुझे लगता है कि बहुत गहरा नहीं है। कुछ समय बाद यहाँ का पानी सूख जाएगा। अभी बरसात हुई है, अत: तालाब से तालाब जुड़े हैं और आगे सागर भी है। इसलिए समय रहते, हमें इस स्थान को त्याग कर सागर तक पहुंच जाना चाहिए।''

वहाँ खेलने वाले और मटरगश्ती करने वाले जो उसके शिशु मत्स्य थे, उन्होंने कहा, ''आप बूढ़े लोगों को बस यही सूझता है कि, यह करो, वह करो। काहे को छोड़ना? यहाँ अभी मौज-मस्ती है। हम लोग तो यहीं आनंद से हैं, काहे को इतनी दूर जाना?''

ऐसे में उसकी बात कौन सुनता? लेकिन वह विवेकी था। भीष्माचार्य जी महाराज ने उसका सही नाम रखा था 'विवेकी'! वह वास्तव में 'यथा-नाम तथा गुण' ही था। उसने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया, परंतु वे नहीं माने। अत: उसने स्वयं अकेले ही स्थानांतरण कर लिया।

इधर, कुछ दिनों बाद गर्मी बढ़ी, तालाब से तालाब कट गए। यह बड़ा, परंतु थोड़े जल वाला तालाब रह गया। गर्मी और बढ़ी, पानी सूखने लगा, मछलियां तड़पने लगी और तड़पते-तड़पते बेचारी दम तोड़ने लगीं, लेकिन कोई उपाय भी शेष नहीं रह गया था; क्योंकि वे अब स्थानांतर नहीं कर पा रही थीं। अब सब को पछतावा हो रहा था। वे रो रही थी, तड़प रही थी, लेकिन कोई उपाय बचा नहीं। फलस्वरूप सब खत्म हो गई।

इधर, वह वयस्क मत्स्य 'विवेकी' जिसने समय रहते, पहले ही सागर में आश्रय ले लिया था, वहाँ आनंदमग्न था। तुलसीदासजी ने ठीक ही कहा था, ''सुखी मीन जहं नीर अगाधा'' अगाध जल के कारण वह वहाँ पर आनंद में है और मस्ती में तैर रहा है।

मछली की कहानी तो खत्म हो गई, किंतु यह हमें बहुत बड़ा संदेश दे गई कि हमें समय रहते परमार्थ के मार्ग की ओर मुड़ जाना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव कहते हैं, ''ध्यान रखना, काल की गर्मी में यह संसार-सागर सूखेगा, जवानी का जोश ठंडा हो जाएगा, बुढ़ापा आएगा, ये संसारी संबंध टूटने लगेंगे, किसी के पहले और किसी के बाद में। अत: जिस-जिस का मन आज परमात्मा को भुलाकर केवल संसार में ही रम रहा है- उसका मन तड़पेगा। लेकिन उपाय कुछ नहीं रहेगा और मन आखिर तक तड़पता ही रहेगा, पछताता ही रहेगा, -'का वर्षा जब कृषि सुखानी!'

अत: जरूरी है कि इस मन को समय रहते ही परमार्थ मार्ग के माध्यम से श्रीकृष्ण नाम के सागर में पहले ही पहुँचा दिया जाए, तो वह तड़पेगा नहीं; अपितु 'विवेकी' मत्स्य के समान, अंत-समय तक, आनंद से विहार करता रहेगा।

''सुखी मीन जहं, नीर अगाधा।'' अर्थात्, संसार सूखने वाला सागर है और कृष्ण नाम का आनंद-सागर कभी सूखने वाला नहीं है। उसमें अभी से रस लेना सीखो। इसके लिए आवश्यक है कि हम अभी से धीरे-धीरे संसार में, प्रपंच में दिलचस्पी लेना कम करते हुए , परमार्थ के मार्ग में बढ़ना आरम्भ कर दें।

> जब यह संसार सागर सूखेगा, तब जिस-जिस का मन आज परमात्मा को भुलाकर केवल संसार में ही रम रहा है, उसका मन तड़पेगा। लेकिन उपाय कुछ नहीं रहेगा और मन आखिर तक तड़पता ही रहेगा, पछताता ही रहेगा, 'का वर्षा जब कृषि सुखानी!'

साधक सोचता है, ''यह किस तरह किया जाए? जन्म से अब तक बने संबंध, व्यवहार आदि कैसे छूटें, कैसे कम हों? संसार से वैराग्य लेना क्या इतना आसान है?'' मन है कि उस 'अदृश्य-जगत (परमार्थ) की ओर जाता ही नहीं; क्योंकि वह उसको पहचानता ही नहीं।

इस संबंध में पूज्य गुरुदेव बताते हैं-

''मानव का यह सहज स्वभाव है कि रूखी बातों में, शुष्कता में उसका मन रमता नहीं । उसे तो सरस, मधुर, सौंदर्ययुक्त वातावरण ही अपनी ओर आकर्षित करता हैं। अत: इस संसार से वैराग्य की ओर अग्रसर होने की विधि भी सरस होनी चाहिए, नीरस नहीं।''

यही बात श्रीमद्भागवत में, गोकर्णजी महाराज ने अपने पिता पंडित आत्मदेव से भी कही थी । उन्होंने कहा था, ''पिताजी! अनासक्त हो जाइए, इस दृश्यमान प्रपंच से। आसक्ति का रस आपने बहुत लिया, अब अनासक्ति का, वैराग्य का रस लीजिए।'' गोकर्णजी ने उन्हें सावधान किया था कि वैराग्य में, अनासक्ति में रस तब तक प्राप्त नहीं होता, जब तक उसमें भगवान की भक्ति का उदय नहीं होता। भक्ति रहित वैराग्य नीरस होता है :-

देहेऽस्थिमांसरुधिरेऽभिमतिं त्यजत्वं,
जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभंगनिष्ठं
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः।।

सामान्यत: एक बात आप सर्वत्र देखेंगे कि जो निर्गुणवादी संत हैं, चाहे वह राम नाम लेते हों अथवा मुक्ति के लिए कोई अन्य प्रयास करते हों, वे भी विरक्त ही हैं। वे भी अच्छे ही हैं। लेकिन जो विरक्ति मीराबाई और भगवान चैतन्य महाप्रभु में मिलेगी, जो रस इनमें मिलेगा, वह रस इन निर्गुणवादी संतों में नहीं मिलेगा। यह अंतर क्यों आया? कारण यह है कि एक के वैराग्य को भक्ति का अधिष्ठान है और दूसरे को नहीं। जहाँ पर भक्ति का अधिष्ठान होगा, वह वैराग्य भी सरस होगा।

परमार्थ के मार्ग पर आगे कैसे बढ़े?:-

यह सत्य है कि दुःख की निवृत्ति होनी चाहिए। लेकिन क्या केवल दुःख की निवृत्ति ही पर्याप्त है? नहीं। दुःख की निवृत्ति के साथ ही परमानंद की प्राप्ति भी होनी चाहिए। यह भावात्मक बात है। दुःख निवृत्ति निषेधात्मक बात है। दुःख निवृत्ति पत्थर को भी होती है, उसे कहां दुःख है? लेकिन आनंद भी कहां है वहाँ? इसलिए मानव हेतु आत्यंतिक दुःख -निवृत्ति के साथ ही परमानंद की प्राप्ति भी अपेक्षित है। यह वैदिकों का गंतव्य है। अतः एक निर्धारित आयु के पश्चात्, परमानंद की प्राप्ति हेतु भागवत का अनुसरण आवश्यक है।

२) समयाभाव :-

श्रीमद्‌भागवत में गोकर्ण जी महाराज कहते हैं:- **''वैराज्ञरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः।''** फिर कहते हैं,-

''धर्मं भजस्व सततं त्यज लोकधर्मान्
सेवस्व साधुपुरुषाञ्जहि कामतृष्णाम्।''
अन्यस्य दोष गुणचिन्तनमाशु मुक्त्वा
सेवाकथारसमहो नितरां पिबत्वम्।।

परमानंद की इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए जब भक्ति का साधन करना होता है, तो प्रायः यह विचार, सबसे पहले आता है कि 'यह सब करना तो ठीक है महाराज! लेकिन बहुत सारे कर्तव्य पीछे पड़े हैं इसके (भक्ति के) लिए समय ही कहाँ है?' गुरुदेव कहते हैं - ''एक बहन ने मुझसे पूछा, महाराज! मैं सत्संग करना चाहती हूं, लेकिन घरवाले उसमें बहुत रुकावटें डालते हैं, तो क्या करना चाहिए? मैंने पूछा, आप की आयु कितनी है? उसने कहा, ३५ वर्ष। मैंने कहा, जो घरवाले कहते हैं, वैसा ही करना चाहिए। अभी तुम्हारा धर्म, तुम्हारा कर्तव्य, तुम्हारा परिवार तुम्हारे बच्चे, इनसे जुड़े हैं। किंतु ६० वर्ष की आयु के बाद धीरे-धीरे लोकधर्म का त्याग आरंभ कर दो और परमार्थ के साधन को बढ़ा दो।

३) आयु के साथ तृष्णाओं का क्रमिक त्याग :-

आश्रम व्यवस्था में निर्धारित आयु के पश्चात्, अब आगे, ना तो अपना परिवार साथ में रहने वाला है और ना समाज। हम केवल परमात्मा के अंश हैं और परमात्मा के साथ ही हमारा सनातन संबंध है। इसलिए यदि अन्य व्यवहार हमें पारमार्थिक साधनों के लिए प्रतिकूल पड़ते हों, तो उनका त्याग, अवस्था- विशेष के पश्चात् कर देना चाहिए। बढ़ती आयु के साथ एक-एक तृष्णा का और एक-एक वासना का त्याग मनुष्य को करते जाना चाहिए। इसी को पक्का नियम बनालो।

४) पर-दोष दर्शन का त्यागः-

साधक के लिए पराई चर्चा में रस लेना जहर के समान है। यह एक ऐसा व्यसन है, जो अच्छे-अच्छे लोगों को अपनी चपेट में ले लेता है। प्रायः मनुष्य को परचर्चा अच्छी लगती है- ''वह कैसा है? उसके जमाई कैसे हैं? उसका बेटा कैसा है? उसका पड़ोसी कैसा है?और फिर क्या हुआ?'' आदि अक्सर हमारी माताएं मिलती है ना, तो दुनियाभर की चर्चायें करती हैं । वह उनमें बड़ा रस लेती हैं और रोज-रोज । विशेष रूप से यदि किसी के दोष की चर्चा चली हो, तो चौकन्ना हो कर सुनते हैं।

जरा सोच कर देखें-परचर्चा का आखिर मेरे जीवन में क्या लाभ है? आज तक मैंने कितनी परचर्चा की, उसका क्या लाभ हुआ? पहले ही मेरा मन दूषित था, उसे मैंने और दूषित ही बनाया। दूसरों के दोषों का चिंतन करते-करते हमारा मन भी दूषित हो जाता है। याद रखिए, हम अपनी गंदगी को स्वयं बढ़ाते हैं। दूसरी बात, जीवन के अनमोल क्षणों को व्यर्थ खोते हैं। एक-एक क्षण गया, तो जीव ने अपना ही बड़ा घात किया। अतः**''अन्यस्य दोषगुण-चिंतनमाशु मुक्तवा''**

छोड़ो इस आदत को। अच्छा, कब से छोड़ो?आदमी विचार करता है- 'अपनी आदतें बदलनी चाहिए!' बदल देंगे। 'सावन मास पूरा हो जाय, तब।' अथवा 'ग्रहण के बाद से पक्का छोड़ देंगे' आदि -आदि। नहीं, ऐसा कदापि नहीं। छोड़ना है तो अभी से,

इसी क्षण से छोड़ो, 'आशुमुक्त्वा' 'इमीजीएटली'।

५) कुसंग का त्याग अभी करो :–

पूज्य गुरुदेव कहते हैं, ''देखो, सत्संग मिलेगा तब मिलेगा पर कुसंग का त्याग करने के लिए मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है। अच्छी बातों का अभ्यास जब कर सकते हैं, तब करना। किंतु बुराई का त्याग करने के लिए समय की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है, Right now. अभी, इसी क्षण से। प्रवास के लिए चलना हो, तो कभी-कभी सुविधाओं का विचार करते हैं, पर घर में आग लग जाए तो दौड़ने के लिए किसी ने मुहूर्त देखा है? अपने जीवन में लगी हुई आग हम लोगों को नहीं दिखती लेकिन संत के विवेक को दिखती है। इसलिए तुरंत ही छोड़ो इन सब बातों को। कहते हैं- ''**अन्यस्य दोषगुण चिंतनमाशु मुक्तवा।**'' अब क्या-क्या छोड़ना बताया? सब कुछ छोड़ देंगे, तो भी चलेगा, किन्तु कुछ करें बिना रह भी नहीं सकते। इसलिए एकांत में बैठ कर भगवान की 'सेवा' में रस लो।अब यह 'सेवा' क्या है?

६) सेवा-पूजा का सही अर्थ समझो :–

एक होती है ''पूजा''और एक होती है ''सेवा''। उत्तर भारत में ''सेवा'' शब्द अधिक प्रचलित है। पूजा में- मंत्र की और कर्मकांड की प्रधानता है; जबकि सेवा में केवल भाव की प्रधानता होती है। अत्यंत भावुक होकर केवल भगवान की ही सेवा, प्रभु की ही परिचर्या करो, उस में रस लेना भी सीखो। हम सेवा-पूजा करते नहीं, ऐसी बात नहीं है। हम में से बहुत सारे लोग करते हैं। किंतु क्या उसमें उन्हें रस भी आता है? यह बात महत्त्वपूर्ण है। सामान्यत: हम प्रात: कालीन पूजा-सेवा इसलिए करते हैं; क्योंकि यह घर में चली आ रही एक परंपरा है या इसलिए करते हैं कि हमें इस बात का डर लगता है कि परिवार का नियम नहीं मानेंगे, तो कुछ नुकसान हो जाएगा। घर की बहू सेवा करती है सवेरे-सवेरे तो भार समझ कर। वह कहती है कि मेरी सास ने पता नहीं कितने सारे ठाकुरजी इकट्ठे कर रखें हैं, अब मैं इनकी सेवा न करूं तो क्या करूं? वह करती है, परंतु इस सेवा में रस कहाँ? मैंने माताओं की बात की, भाइयों की बात उससे भी अधिक 'सीरियस' है। उनमें तो बहुत-से लोग तो करते ही नहीं हैं, लेकिन माताएँ उनका उद्धार करवाना चाहती है। इसलिए,कभी-कभी पीछे पड़ जाती हैं, ''अजी रोज-रोज नहीं करते, कम से कम आज तो कर लो।'' बड़ी मिन्नतें करने के बाद यह बंधु तैयार होता है। पूजा करने बैठता तो है, लेकिन यह कह कर बैठता है कि, ''तुम नाश्ता बनाओ, मैं अभी जल्दी से पूजा निपटा कर आता हूँ, फिर शांति के साथ बैठकर नाश्ता करेंगे।'' पूजा जल्दी-जल्दी और नाश्ता आराम से! नतीजा यह कि इनके हाथ तो ठाकुरजी की सेवा में लगे हैं, लेकिन मन नाश्ते के चिंतन में ही रमा है। इसका अर्थ क्या है? सेवा-पूजा तो हुई, किंतु केवल औपचारिक रूप में, जिसमें रस नहीं आया।

७) रस लेना अधिक महत्त्वपूर्ण है :–

वास्तव में भगवान की सेवा में रस आया कि नहीं, इसकी पहचान क्या है? इसकी पहचान यह है कि ठाकुर जी की सेवा-पूजा करने के बाद भी ठाकुर के सामने से उठने का मन ही न करें। आज मेरे ठाकुर कितने सुंदर लग रहे हैं! उनको मैं निहारता रहूं। कभी भक्त को ठाकुर प्रसन्न लगते हैं और कभी अप्रसन्न! वे अपने मन:राज्य के एकरूप हो जाते हैं। उसे रस है, वहीं बैठे रहने में। उसका वहाँ से उठने का मन नहीं करे। एकांत में सेवा का रस कितनी देर तक? जितना हो सके। लेकिन दिन भर तो नहीं हो सकता। फिर वही लोकांत में आ गए, लोगों से मिले जुले। फिर सुना, कहीं कथा हो रही है, तो बैठ गए कथा सुनने को। कथा में भी रस का अनुभव। कथा केवल सुनने की वस्तु

शेष पृष्ठ १० पर

भरतभूमि के अंग-अंग में वेदों के स्वर गूंजेंगे।

वैदिक केंद्र का उद्घाटन

स्वामी रामदेवजी: दुनिया में भारत का गौरव फैलाएंगे वेदार्थी।

पूर्वी भारत के पहले, शांतिदेवी जालान अंतर्राष्ट्रीय वैदिक केंद्र का उद्घाटन

'भरतभूमि के अंग-अंग में वेदों के स्वर गूंजेंगे, जीवन आहुति से भारत का सुवर्णयुग फिर लाएंगे'.... गीत का पाठ सामूहिक रूप से लयबद्ध होकर जब बटुकों ने किया, तो तालियों की गड़गड़ाहट और भारतमाता के जयकारों से दक्षिण २४ परगना का बारूली (गोविंदपुर) ग्राम गूंज उठा। मौका था पूर्वी भारत के पहले वेदविद्यालय के अंतर्गत शांतिदेवी जालान अंतरराष्ट्रीय वैदिक केंद्र के उद्घाटन का।

संस्थान का मुख्य उद्देश्य वैदिक मंत्रों के जाप की विलुप्त परंपरा को संरक्षित करना, बढावा देना और छात्रों के बीच वैदिक ज्ञान का प्रसार करना है। यहाँ न केवल संस्कृत, बल्कि अंग्रेजी, कम्प्युटर साइंस की भी शिक्षा दी जाएगी। योगगुरु बाबा रामदेवजी ने यहा वेद-संस्कृत आदि के अध्ययन के लिए देश के विभिन्न राज्यों से आए बटुकों का उत्साह बढाते हुए कहा कि यहाँ से वेद का ज्ञान प्राप्त कर वेदार्थी पूरी दुनिया में भारत का गौरव फैलाएंगे।

समारोह के उद्घाटनकर्ता केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडेकर थे, पर किसी अपरिहार्य कारणों से नहीं आ सके। नई दिल्ली से उन्होंने वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के जरिए बधाई संदेश भेजा और आयोजकों का अभिनंदन किया।

उन्होंने आधुनिक और प्राचीन शिक्षा के बीच तालमेल की आवश्यकता पर जोर दिया। जावडेकरजी की अनुपस्थिति में स्वामी रामदेव जी, स्वामी गोविंददेव गिरि जी आदि अतिथियों की उपस्थिति में समारोह हुआ।

स्वामी गोविंददेव गिरि जी ने कहा कि इस केंद्र में १ हजार बटुकों को वेद शिक्षा दी जाएगी जो भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में भारत के सांस्कृतिक दूत के रूप में जाएंगे। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि बंगभूमि में जहाँ गोमाता की कदर नहीं वहाँ इस तरह के वेद केंद्र की स्थापना का बहुत महत्त्व है। उन्होंने कहा कि वेदविद्या का लुप्त होना भारत की सबसे बड़ी हानि है। विकास हो, पर हमारी परंपरा को खोना नहीं चाहिए। बिना वेद भारत भारतमाता नहीं।

ईश्वर का अस्तित्व हैं कि नहीं इस पर बहस संभव है, लेकिन वेद प्रामाणिक है और इसे सभी को स्वीकार करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि वेद की सेवा ही राष्ट्र, ईश्वर और गुरु सेवा है।

रामदेवजी ने ममता से संस्कृत सीखाने के लिए मांगा समर्थन:

रामदेवजी ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से इस केंद्र में वेद-संस्कृत सीखाने के लिए समर्थन मांगा और कहा कि वेदों की सच्ची भावना सीखने से लोगों के बीच एकता बढाने में मदद मिलेगी और एक अखंड भारत का निर्माण होगा।

उन्हें पूरी उम्मीद हैं कि मुख्यमंत्री बंगाल में वेद और संस्कृत सीखाने की इस दिशा में समान रूप से सहायक साबित होंगी। उन्होंने वेद को अनादि-अनंत बताते हुए कहा कि यह दुनिया का प्राचीनतम धर्मग्रंथ है। यह सनातन धर्म और हमारी संस्कृति का मूल आधार है।

उन्होंने कहा कि जिस दिन हर जिले, हर अंचल में वेद का अध्ययन होने लगेगा उसी दिन भारत दुनिया में सिरमौर बनकर उभरेगा। रामदेवजी ने कहा कि यह बेहद अफसोसजनक है कि कई लोगों को यह मालूम ही नहीं कि वेद कितने हैं? उन्होंने कहा कि वेद हमारे प्राण, आत्मा और हमारी पहचान है।

इनका रहा योगदान :-

गौरांग वेदविद्यालय ट्रस्ट कोलकाता के तत्त्वावधान में प्रवासी राजस्थानी उद्योगपति और समाजसेवी सुधीर जालान ने अपनी माता की स्मृति में शांति देवी जालान अंतरराष्ट्रीय वैदिक केंद्र का निर्माण कराया है। इसके साथ ही महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के देशभर में ३४ वेदविद्यालय हो चुके है। यहाँ असम, ओडिशा, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के छात्रों को वेद विशेषज्ञ रामरूप मिश्र वेद की शिक्षा देंगे।

छात्रों के भोजन सहित निवास की भी व्यवस्था की गई हैं। पुणे में १९९० में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान की स्थापना में अहम भूमिका निभानेवाले स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज इसके मार्गदर्शक रहेंगे।

संरक्षक सुधीर जालान, सुशील जालान, गौरीशंकर झंवर, श्यामसुंदर शाह, महेश नंदे (पुष्कर), ट्रस्टी किशन मल, गोविंद सारडा, रेखा जालान, अलका जालान, सुमित्रा मोदी और शिवरतन मोहता आदि सक्रिय रहे।

– राजस्थान पत्रिका के सौजन्य से

पृष्ठ ८ का शेष..*(संसार से परमार्थ की ओर कैसे मुड़ें?)*

नहीं है- "**पिबत भागवतं रसमालयम्**" अरे, यह भगवदीय रस है, इसका पान निरंतर अधिक से अधिक करने के लिए है। कथा कोई लेक्चर नहीं है। लेक्चर में आपको नई इनफार्मेशन दी जाती है। कथा में, उस रस में, अपने मन को डुबोना होता है।

८) कैसे लें सेवा में रस :-

ठाकुर सामने हों और उनमें हम रस लेते रहें और कुछ नहीं, तो प्रेम से उनके साथ बातचीत करते रहें। कथा में आकर बैठे, तो कथा में रसपान करते हुए निमज्जन करें, फिर चाहे एकांत हो या लोकांत, कोई फर्क नहीं पड़ता। भगवान के मंगलमय नाम का रसपान करो। वह तो हर जगह अपना सच्चा साथी है । सेवा के लिए भी तो ऐसे स्वरूपादिकों की आवश्यकता होगी, कथा के लिए भी तो किसी वक्ता की आवश्यकता होगी। पर, ध्यान रखना, भगवान के मंगलमय नामस्मरण के लिए किसी की भी आवश्यकता नहीं होती है। नामस्मरण 'स्वाधीन साधना' है , जैसे ही आपने भगवान का नाम पुकारा, भगवान आपके साथ हैं! आवश्यकता इस बात की है कि हम केवल उस नाम को गावें, गुनगुनावें और रस लेते हुए निरंतर ध्यान '**सेवाकथारसमहो नितरां पिबत्वम्**'। इसी रस का पान कीजिए। जीवन की सार्थकता इसी रसपान में है! धन्य हैं वे लोग, जो इस रस का पान करते हैं। कभी-कभी संसारी पागलों को ऐसा लगता है कि भगवान की कथाओं में, प्रभु के दर्शन में, भगवान के नाम-जप में लगाया हुआ समय व्यर्थ गया। ध्यान रखना, सच यह है कि इतना ही समय सार्थक हुआ, बाकी का सब बेकार गया। लेकिन यह समझ में आने से पूर्व मनुष्य को अनेक बार, बहुत-कुछ खो देना पड़ता है। जिसके जीवन में जितनी जल्दी आ गया यह भाव, वह धन्य हो गया। अंत में तो सब को यही करना है।

ये सारे सूत्र हैं। उत्तम साधक को इससे अधिक कुछ पाने की आवश्यकता नहीं है।

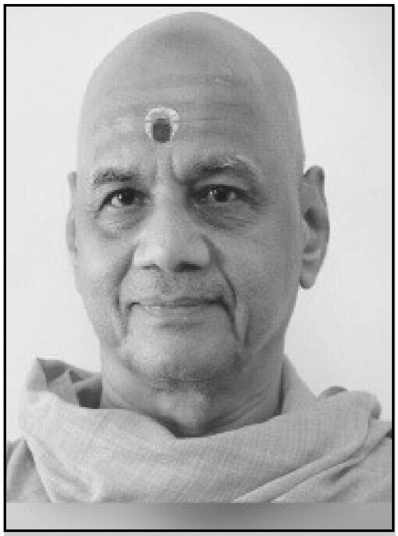

जीवन में सफलता प्राप्ति के स्वर्णिम सूत्र

जीवन में कुछ लोग सफल और कुछ असफल क्यों हो जाते हैं? इस विषय पर, प.पू. गुरुदेव के प्रवचन के कुछ बिन्दु हमने विगत अंक में देखें। उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए शेष बिन्दु निम्न प्रकार हैं :–

जीवन में सफलता प्राप्ति हेतु हमारा परस्पर व्यवहार करने का तरीका भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अर्थात् एक दूसरे को सम्मान देते हुए, आप अपने आप को बनाइए। यदि मैं सम्मान चाहता हूँ, तो मैं दूसरों का भी सम्मान करूँ। यदि मैं लोगों से मधुर वाणी की अपेक्षा करता हूँ, तो मुझे भी उनके साथ उसी प्रकार की वाणी में बात करनी चाहिए। भगवद्गीताकार कहते हैं– एक दूसरे का सम्मान करते हुए हम यदि जीवन जीते हैं, तो अपने आप इस प्रकार का वातावरण बनता है कि हम परस्पर पारिवारिक भावना का विकास कर सकें। चाहे हम ऑफिस में हैं अथवा घर में – हम कहीं पर भी हैं, वहाँ एक दूसरे के साथ हमारा व्यवहार किन–किन बातों से जुड़ा रहना चाहिए ? इस विषय में गीताकार ने एक – सुंदर बात कही है–

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।(१७/१५)

मेरे जीवन की सबसे बड़ी सफलता मेरे Interaction पर निर्भर करती है, मेरी वाणी पर निर्भर करती है कि मैंने अपनी वाणी को साधा क्या? जैसे शरीर को साधना, आरोग्य के लिए, दीर्घायु के लिए आवश्यक है, वैसे ही वाणी को साधना, परस्पर शालीन व्यवहार के लिए आवश्यक है।

अपनी वाणी को मधुर बनाना अर्थात् मैं किसी को दुःख न दूँ, पीड़ित न करूँ। इस प्रकार मैं अपनी वाणी को साध कर रखूँ। **'अनुद्वेगकरं वाक्यं'**– दूसरों को सुख पहुंचाने के लिए मैं झूठ भी नहीं बोलूं। **सत्यम्‌ह** संपूर्ण जीवन को यदि सरस–सफल बनाना है, तो एक बात तो पक्की है कि हमें अपने अंतःकरण को निरंतर सत्य का साथी बनाए रखना होगा। असत्य का पक्षधर, अपने जीवन में कभी न कभी असफल होगा ही होगा। यह निश्चित है। इसलिए दूसरे को कष्ट भी ना पहुँचे और मैं सत्य के साथ प्रताड़ना भी न करूँ इस प्रकार की वाणी, इस प्रकार मेरा संवाद करने का कौशल मुझे आना चाहिए। इससे मेरा सामाजिक व्यवहार भी ठीक रह सकता है– **'अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।'**

भगवद्गीता के अनुसार अंतिम बात बताता हूँ बतलाता हूँ, भगवद्गीता का अंतिम श्लोक है–

**''यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।१८/७८।।**

भगवद्‌गीता हमें जीवन को सफल बनाने की कला सिखाने वाला ग्रंथ है। यह उसका अंतिम श्लोक है। हमारे ज्ञानेश्वर महाराज ने इसे गीता के मंदिर पर फहराने वाली ध्वजा बताया है। ऐसा उन्होंने क्यों कहा ? इसमें दो बातें हैं ह्न योगेश्वर श्रीकृष्ण और धनुर्धर पार्थ, और इन दोनों का मिलन ।

आप लोगों को पता ही है कि भगवद्‌गीता, श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद है। गीताकार कहते हैं, ''जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण और धनुर्धारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति, अचल नीति है–ऐसा मेरा मत है।'' हमारे भीतर भी श्रीकृष्ण; विवेक (Discretion) के रूप में विराजे हैं और दूसरे धनुर्धर पार्थ : यह पुरुषार्थी शरीर– (The physical fitness and the mental fitness) ये दोनों बातें जहाँ रहेंगी, वहाँ सफलता निश्चित है।''

इस तरह हमारे शरीर को फिट रखने की कला आ गई और हमारे मन को फिट रखने की कला आ गई, तो जीवन का सौंदर्य वहाँ पर होगा। विजय, सफलता और समृद्धि वहाँ पर होगी ही। साथ ही नैतिक जीवन का यश भी उसे प्राप्त होगा।

इसलिए जीवन की सफलता के लिए कहीं से भी आप प्रयास करें, तो इन तीनों बातों का ध्यान रखिए – पहली बात, मैं अपने शरीर को निरंतर फिट रखूं। दूसरी, मैं अपने मन को, अंतरंग को, मेरी बुद्धि को निरंतर सावधान रखूं; ब्रेन फिटनेस और तीसरी बात है आत्मविश्वास।

आप लोगों को पता है कि भगवद्‌गीता, श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद है। गीताकार कहते हैं, ''जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण और धनुर्धारी अर्जुन हैं, वहीं पर श्री, विजय, विभूति, अचल नीति है-ऐसा मेरा मत है।''

हमारे भीतर भी श्रीकृष्ण; विवेक (Discretion) के रूप में विराजे हैं और दूसरे धनुर्धर पार्थः यह पुरुषार्थी शरीर – (The boady fitness and the mind fitness) ये दोनों बातें जहाँ रहेंगी, वहाँ सफलता निश्चित है।''

मन में सदा इस बात का विश्वास रहे कि– ''मैं सफल होकर रहूँगा।'' कभी अपनी सफलता पर संशय नही करना चाहिए; अपितु अपने कर्म के प्रति सजगता बनाए रखनी चाहिए। भगवद्‌गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को रणक्षेत्र में पीछे हटने की मानसिकता व्यक्त करने पर एक डांट पिलाई, उसका 'सेल्फ कॉन्फिडेंस' बढ़ाने के लिए एक 'शॉक ट्रीटमेंट' दिया, भगवान बोले :–

**''क्लैब्यं मा स्म गमः
पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ
परन्तप।(२/३)**

यह श्लोक स्वामी विवेकानंदजी को भी बहुत प्रिय था। वे कहा करते थे, ''भगवद् गीता के सारे श्लोक मुझे प्रिय हैं, लेकिन यह श्लोक सबसे अधिक प्रिय है; क्योंकि यह श्लोक 'कॉन्फिडेंस' निर्माण करने वाला है।'' भगवान ने अर्जुन को डांटा कि तुम यह कमजोरी त्यागो, खड़े हो जाओ। भगवान का उपदेश इस डांट के बाद आरंभ हुआ था। स्वामीजी कहा करते थे कि, ''यह श्लोक जब–जब मैं पढ़ता हूँ, मेरे भीतर स्फूर्ति और चेतना जागृत हो जाती है।''

मैं तीन वाक्य बोलता हूँ –यह तीनों वाक्य आप लोगों को पता है, मगर चौथा वाक्य क्या आप लोगों को पता है?

ये वाक्य हैं –

1. **If wealth is lost, nothing is lost.**
2. **If health is lost, some thing is lost.**
3. **If charector is lost everything is lost.
But you know, I add one more, that is,**
4. **But if confidence is lost, every thing is lost for ever.**

इसलिए अपना आत्म-विश्वास कभी न खोयें तथा इसके विपरीत सदा सोचें कि आप सफल होकर ही रहोगे। मुंबई के एयरपोर्ट पर एक सुंदर वाक्य लिखा हुआ है,

पता नहीं लोगों का ध्यान उधर गया है कि नहीं, लेकिन Arriving के स्थान पर लिखा हुआ है, "You become the thing you want to see" यह संक्षेप में पूरा योगवासिष्ठ है। विश्वास रखिए कि मुझे जीवन में अमुक- सफलता प्राप्त करनी है, तो आप सफल होकर रहेंगे। पूरे विश्वास के साथ अपने शरीर को स्वस्थ रखते हुए, अपनी बुद्धि को सावधान रखते हुए प्रयास कीजिए और जीवन में जो भी आप चाहेंगे, वह मिलेगा। 'आप सफल हो कर रहेंगे', यह विश्वास आप के अंतःकरण में अपने- आप जाग्रत हो जाएगा। स्मरण रखिए, अगर शरीर और विवेक- बुद्धि ,सावधान रहेगी तो इस संसार में आपके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। ये आपकी अनुभूति हो जाएगी ।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के ये थोड़े-थोड़े सूत्र मैंने अल्प समय में, आपके सामने रखे। ये केवल हमारे भौतिक जीवन के अंगों को लेकर के सूत्र हैं। इससे आगे बढूँगा नहीं, लेकिन एक बात अवश्य कहूँगा कि- भौतिक जीवन के और भौतिक सफलता के पार भी बहुत कुछ है, जो हमारी भौतिकता को पूर्ण करता है, लेकिन उन विषयों को सुनने के लिए ऐसे व्याख्यानों से भी ज्यादा 'कथा' उपयोगी होती है; क्योंकि अंततोगत्वा आप कितना भी जीवन को सफल बनाने का प्रयास करेंगे, कितना भी सुंदर बनाने का प्रयास करेंगे, जब तक आप परमात्मा से प्रेम करना नहीं सीखेंगे- परमात्मा का अर्थ? कहीं तो भी ऊपर आकाश में रहने वाला परमात्मा, ऐसा नहीं है। परमात्मा आपके भीतर भी है, परमात्मा आपके समक्ष भी है और परमात्मा वहाँ पर है, जहाँ पर आपकी श्रद्धा जागृत हो जाती है; उस प्रेम के बिना जीवन की पूरी सफलता किसी बात से नहीं होती। जीवन की अंतिम सफलता इस प्रेम में ही है। यह प्रेम करना हम सीखें, यह प्रेम सबके साथ करना सीखे। नहीं तो, आपने कितना भी कमाया, कितनी भी गाड़ियां दौड़ाई, लोगों ने आपको कितना भी बड़ा- बड़ा कहा, कितनी भी फोटुएं अखबारों में छपी अर्थात कितनी भी प्रसिद्धि आपको मिल गई- लेकिन यदि आपका अंतःकरण ड्राई (रूखा) रहेगा, उसमें प्रेम नहीं होगा, यदि आपने अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति के साथ स्नेह से वर्ताव नहीं किया, प्रेम का व्यवहार नहीं किया, तो आपका जीवन रूखा रहेगा और रूखा- जीवन, बाहर के प्रेम से भरा दिखने पर भी सफल नहीं माना जायेगा। इसलिए 'Love your own life and love the life of others also'

यही कुल मिलाकर मैं आप लोगों तक अपनी बात पहुँचाना चाहता हूँ।

आई.आई.टी. चेन्नई द्वारा वेदों में शोध कार्य

चैन्नई में स्थित I.I.T. में अब वेदों में वर्णित विज्ञान पर भी शोध-कार्य किया जायेगा। इसके लिये सामाजिक विज्ञान विभाग में संस्कृत का एक अलग विभाग बनाया जायेगा। संत राजेन्द्र सिंह जी महाराज ने इसके लिए नब्बे लाख रु. की राशि संस्थान को दी है। संत महाराज सावन किरपाल रूहानी मिशन के अध्यक्ष हैं। उन्होंने स्वयं भी इसी संस्थान से १९६७ में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक. की शिक्षा प्राप्त की थी। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान पं. सम्पदानन्द मिश्र उक्त विभाग के अध्यक्ष बनाये गये हैं।

चारों वेदों और विशेषकर ऋग्वेद में वैज्ञानिक सिद्धान्तों की भरमार है। प्रत्येक विषय के विज्ञान से संबंधित सूत्र वेदों में बताये गये हैं। गोवर्धन पीठ के दिवंगत शंकराचार्य भारती कृष्ण तीर्थ जी महाराज ने अथर्ववेद से ही वैदिक गणित के सूत्र खोज निकाले थे। अट्ठारह पुराणों में भी विज्ञान के अनेक सिद्धान्त बताये गये हैं। परमाणु का माप भागवत पुराण में है। प्रकाश की गति भी बताई गई है। सापेक्षतावाद का सिद्धान्त भी पुराणों में है। इसलिये वेदों और पुराणों के विज्ञान की खोज का कार्य निश्चित ही प्रशंसनीय है। ये कार्य बहुत पहले ही हो जाने चाहिये थे। (पाथेय कण से साभार)

ज्ञानेश्वर गुरुकुल की ओर से श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी (पतंजलि योगपीठ) को भीष्म पुरस्कार

परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज द्वारा स्थापित 'संतश्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल' सार्वजनिक सेवाभावी न्यास के अंतर्गत गत १८ वर्षो से साधना शिविर, साधक मार्गदर्शन, सत्साहित्य प्रकाशन, संत साहित्य का अध्ययन करने वाले साधकों को आर्थिक सहयोग, संत वाङ्मयके संरक्षण हेतु अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले महापुरुषों को 'संत ज्ञानेश्वर पुरस्कार' प्रदान करना इत्यादि अनेक उपक्रम गत १८ वर्षों से निरंतर चल रहे हैं।

पूज्य स्वामीजी के निकटतम साधक, तत्त्वज्ञानके अभ्यासक, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त गणितज्ञ एवं पुणे स्थित 'भास्कराचार्य प्रतिष्ठान' के ख्यातिप्राप्त प्राध्यापक डॉ. रवीन्द्र जी कुलकर्णी ने अपने स्वर्गीय पिताजी डॉ. श्रीपाद दत्तात्रेय कुलकर्णी जी की स्मृति प्रीत्यर्थ प्रतिवर्ष संत ज्ञानेश्वर गुरुकुल के माध्यम से एक पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय लिया है।

स्व. डॉ. श्रीपाद दत्तात्रेय कुलकर्णी जी स्वयं एक वरिष्ठ राजकीय अधिकारी एवं इतिहास के अभ्यासक तथा संशोधक रहे, 'भारतीय इतिहास संशोधन मंदिर' इस संस्था के माध्यम से 'इतिहास के विविध कालखंड एवं पहलू' विषय पर शोध करके १८ खंडों में पुस्तकों का निर्माण किया तथा भारतीय इतिहास के बारे में अनेक देशी, विदेशी इतिहासकारों द्वारा लिखा गया लेखन कितना सदोष, एकांगी व पूर्वाग्रहदूषित है, यह प्रमाण सहित प्रकट किया तथा 'भारतीय इतिहास संशोधन मंदिर संस्था' के

.... शेष पृष्ठ ३२ पर

पूर्णयोग-बोधिनी गीता (९)

ध्यान में जप का महत्त्व!

अब तक हम देख चुके हैं :

भगवद्‌गीता ही पूर्ण योगशास्त्र है। मानव जीवन के आरंभिक स्तर से लेकर पारमार्थिक अनुभूति के अंतिम छोर तक पहुँचने की सभी सीढ़ियों का मार्ग दर्शन हमें इस महान ग्रंथ में मिलता है। इसी दृष्टि से हम श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का भिन्न क्रम में अध्ययन कर रहे हैं।

इसके अंतर्गत भगवद्‌गीता के ही माध्यम से हमने जाना कि हम अपने आस-पास के वातावरण से लेकर अंतरंग की अंतिम अनुभूति तक कैसे पहुँच सकते हैं?

विगत अंक में हमने देखा कि किस प्रकार प्राण और मन की स्थिरता एक-दूसरे पर निर्भर है। जिस प्रकार मन को स्थिर करने के लिये प्राण का नियंत्रण उपयोगी है, उसी प्रकार ध्यान करने के लिये जप भी उपयोगी है। जप करते हुए ध्यान करने से साधक में उसकी योग्यता आ जाती है। इसलिए एकदम आरंभ से ही ध्यान करने नहीं बैठ जाना चाहिये। यदि ऐसा करेंगे, तो थोड़ी गड़बड़ी होगी। क्या? यह हम आगे देखेंगे।

ध्यान से पूर्व जप आवश्यक :-

संत श्री गुलाबराव महाराज नि:शंक होकर एक बात कहते हैं कि यदि आरंभ से ही ध्यान करेंगे, तो विकार ज्यादा बढ़ेंगे; क्योंकि ध्यान में चित्त एकाग्र होता है और यदि अशुद्ध चित्त एकाग्र हो गया; तो अशुद्धता की बुद्धि होती है। विकार प्रबल होंगे। चित्त एकाग्र होना चाहिये; लेकिन चित्त शुद्ध भी होना चाहिये।

इसलिये चित्त को पूर्णतया शुद्ध करने के लिये ध्यान से पहले जप का महत्त्व है। अतः आपका ध्यान लगता है; नहीं लगता है, तो भी जप का अभ्यास खूब करो। वह उपयोगी है, ऐसा भगवान भगवद्‌गीता में कहते हैं,

– अर्जुन, ''यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि'' और बाद में अठ्ठारहवें अध्याय में भगवान ने कहा, ''यज्ञ दान तप: कर्म न त्याज्यमिति चापरे।।'' (१८/३) यज्ञ, दान और तप, तीन कर्म मनुष्य को छोड़ने नहीं चाहिये। एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, 'महाराज, हम रोज यज्ञ कैसे कर सकते हैं? हमने तो जीवन में एक-दो बार कभी किया होगा।' मैंने कहा, 'भले आदमी! तुम्हारा ध्यान इस बात की ओर क्यों नहीं गया कि भगवान जप को भी यज्ञ कहते हैं। और जप को केवल यज्ञ कहते ही नहीं हैं, जप को सर्वोत्तम यज्ञ भी बताते हैं।' ''यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि''। ''श्रीराम जयराम जय जय राम'' का जप, ''ज्ञानेश्वर माउली'' का जप, ''ॐ नम:

शिवाय'' का जप, जो भी जप आपको प्रिय लगे, उस मंत्र का खूब जप करो। यदि आपने जप मन से किया और खूब किया; तो आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं, दूसरे की सुनने की आवश्यकता ही नहीं है।

यदि लगातार जप किया जाता है, तो जप आरंभ करते ही आपके प्राणों के स्पंदन नियंत्रित होना शुरू हो जाते हैं। उसके Vibrations regulate हो जाते हैं। हर जप का अपना अपना Vibration है; अपने-अपने स्पंदन हैं। आपके प्राणों के स्पंदन नियंत्रित हो जाते हैं और उसकी एक विशेष बात ये है कि आपके प्राणों के स्पंदन उस प्रकार नियंत्रित हो गये, तो संसार में उन प्राणों के स्पंदनों के साथ जो लोग एकरूप होंगे, उन महात्माओं के साथ भी आपका अंतरंग संबंध हो जाता है; क्योंकि आपकी frequency उनसे मिल जाती है। They come on same frequency.

आप ये 2G, 3G करते हैं न। मुझे कहीं पर एक Message आया था। सबसे अच्छा कौनसा? मैने कहा, 'गुरुजी'। 2G, 3G, 4G, 5G मैंने कहा, गुरुजी।

तो चलो, I was talking of the frequency, ये समान frequency के ऊपर जो लोग रहेंगे, उनके चित्त अपने आप अंतरंग से एक स्तर पर आ जाते हैं। और इसमें एक मौज ये भी है कि बिना बातचीत किये भी आप अपने विचार दूसरों के मन में संप्रषित कर सकते हैं। आप ऐसा प्रयोग मत करना, लेकिन ये हो जाता है। ये अंतरंग की बात है। कोई भी नाम, कोई भी मंत्र। एक बात पक्की ध्यान में रखना, हमारे सारे सिद्धों ने जप किया है।

> जप आरंभ करते ही आपके प्राणों के स्पंदन नियंत्रित होना शुरू हो जाते हैं। उसके Vibrations regulate हो जाते हैं। हर जप का अपना अपना Vibration है; अपने-अपने स्पंदन हैं। आपके प्राणों के स्पंदन नियंत्रित हो जाते हैं और उसकी एक विशेष बात ये है कि आपके प्राणों के स्पंदन उस प्रकार नियंत्रित हो गये तो संसार में उन प्राणों के स्पंदनों के साथ जो लोग एकरूप होंगे, उन महात्माओं के साथ भी आपका अंतरंग संबंध हो जाता है; क्योंकि आपकी frequency उनसे मिल जाती है।

कुर्याद अन्यन् न वा कुर्याद्
मंत्रो ब्राह्मण उच्चते।
जपेनैवतु संसिद्धयेत् ब्राह्मणो
नात्र संशयः।
जपात् सिद्धिर्जपात्–
सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः।

इसलिये खूब जप करना। और माला लेकर के करना। ये आजकल का Modern spriritualism है न, ये उतना ठीक नहीं है। जप करो, माला लेकर के करो।

ध्यान की विधि –

हमारे सारे सिद्धों ने ये ही काम किये। स्वामी विवेकानंद के हाथ में अंतिम समय तक माला थी। अब आप कहाँ उनसे बड़े हो गये? सोचो। स्वामीजी मच्छरों से घिरी हुई उस पंचवटी में रात दस बजे से सुबह चार बजे तक ध्यान के लिये बैठते। छह-छह घंटे ध्यान में बैठते; रात्रि के समय, नंगे बदन, केवल कौपिन धारण किये। उनके गुरु बंधु ने लिखकर रखा है कि नरेंद्र जब ध्यान के लिये बैठता, दस ही मिनट में उसका सारा शरीर मच्छरों से भर जाता। मानो मच्छरों की चादर ओढ़ ली है उसने। अब मच्छर आ करके बैठते, तो कोई प्रेम करने के लिये थोड़े ही बैठते। वो तो अपना काम करने के लिये ही बैठते। स्वामीजी ध्यान में लीन। इसलिये आपके पास भी यहाँ पर कोई मच्छर आवे, तो ऐसे मानना कि आज मुझे बड़ा अच्छा ध्यान का मौका मिला है। मच्छर को ignore करना मैं जानता हूँ कि नहीं, तब भी मेरा मन स्थिर होता है कि नहीं? अरे, दो मच्छर आ गये; तो रातभर की नींद हराम, ऐसा नहीं।

परिस्थिति निरपेक्ष साधन करना आना चाहिये। स्थितियाँ रहें या बदलें; कैसी भी हो, मेरा साधन

चल रहा है। वही आदमी साधन कर सकता है। तो जप के कारण आगे चल करके ध्यान के लिये हमारे मन की पात्रता अपने आप बन जाती है। प्राणायाम और जप; इन दोनों को साथ लेकर के ध्यान किया जाता है, तो कुछ ही महीनों में ध्यान की अच्छी तैय्यारी हो जाती है।

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा – अच्छा, वहाँ पर भगवान ने क्या कहा है, युक्त आसीत मत्परः। 'मत्परायण' होकर के बैठना। अब 'मत्परायण' का जो अर्थ है, यह अलग अलग हो सकता है। लेकिन आपको भगवान का जो सगुण रूप प्रिय हो, उसी का ध्यान करना अच्छा है।

ध्यान हेतु स्वरूप सुन्दर होः–

कुछ लोग कहते हैं, सामने बिंदु रखो और उसकी ओर देखो। कुछ कहते हैं, एक ज्योति जलाओ और उसकी ओर देखो। कुछ कहते हैं, अपनी नाक की ओर देखो। कुछ कहते हैं नाक के उपर देखो। कुछ लोग सांस की ओर देखने को कहते हैं। क्यों देखो ? भगवान की ओर देखो न। ये सबसे अच्छा है। भगवान का सुंदर स्वरूप श्रीकृष्ण का अतीव सुंदर स्वरूप, भगवान राघवेंद्र सरकार का, अतीव सुंदर स्वरूप, भगवान भूतभावन, पतितपावन महादेव का, जगदंबा माता का या कोई भी रूप आप को जो प्रिय है। इसमें किसी प्रकार के रूप का आग्रह नहीं, कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं। बस इतना ही है कि आपको वो सबसे सुंदर एवं प्रिय लगना चाहिये; क्योंकि आपको वो सबसे सुंदर नहीं लगेगा, तो आपका मन उसमें डूबेगा नहीं। एक ओर तो वो सबसे सुंदर लगना चाहिये और दूसरी ओर वो सबसे Important भी लगना चाहिये।

ध्यान के लिये निष्ठा और निष्ठा हेतु कथा आवश्यक :–

रूप होंगे, अनेक दूसरे रूप भी होंगे, किंतु मेरे तो ये हैं। मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई। यहाँ दूसरे लोगों का अपमान नहीं है। लेकिन अपनी निष्ठा की बात है। 'श्रीनाथेऽजानकी नाथे नमे भेदोस्ति किञ्चन'। श्रीनाथजी भगवान और जानकीनाथ भगवान श्रीराम, मुझे उनमें कोई अंतर नहीं लगता है, तथापि 'मम सर्वस्वं रामो राजीव लोचनः।' फिर भी मेरे प्रभु तो भगवान श्रीराम है, इस प्रकार की निष्ठा अपने अंतरंग में निर्माण होनी चाहिए। निष्ठा निर्माण के लिये, कथा का श्रवण करना चाहिए। जब कथा का श्रवण होगा, तो भगवान में प्रेम होगा। उसके बिना नही होगा। **इसलिये इस कलियुग में कथाश्रवण अत्यंत बड़ा साधन है।**

तुकाराम महाराज तो कहते हैं, ''तुका म्हणजे सोपे वैकुंठसि जाता, रामकृष्ण कथा हेचि'। भगवान की कथा ही मार्ग है। भगवान गीता में वही बात 'कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति।

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च।। (१०/९)

भगवान के बारे में बोलो। बोलने का मन होना चाहिये। बोले बिना रहा ही नहीं जाता; ऐसा होना चाहिए। आप ऐसा नहीं कर सकते कि आधा घंटा भगवान में मन लगाएंगे और बाईस घंटा टी.वी. देखेंगे। फिर वो मन लगेगा ही नहीं; क्योंकि आपको आधा घंटा मन एकाग्र करना है, तो साढ़े तेईस घंटे की Discipline follow करनी पड़ेगी। ये तो पक्का है।

यह तो वही हुआ कि, ''आमरस में हाथ डाला, गटर में हाथ डाला''। फिर आमरस में हाथ डाला फिर गटर में हाथ डाला, ये नहीं चल सकता। गटर में जब तक डालना है, डाल लो। एक बार धोलो फिर आमरस में डालो। हमारे ठाकुर वैसे हैं। इसलिये यह जो बिचला चित्त है न, इसको विक्षिप्त चित्त कहा है। भगवान पतंजलि ने चित्त के पाँच स्तर बतलाए हैं। क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ़, एकाग्र और निरुद्ध। ये पाँच स्तर हैं। उसमें जो विक्षिप्त है न, यह कथा में तल्लीन हो जाएगा। बड़ा अच्छा लगेगा उसको। कथा जब सुनता है, कथा जब कहता है; तब कथा में तल्लीन है। और वहाँ से उठने के बाद झंझटबाजी में भी तल्लीन है। इसमें भी जाता है, उसमें भी जाता है। कम से

कम ये हो गया कि मूढ़ता से बाहर आया, क्षिप्तता से बाहर आया, लेकिन अभी एकाग्र नही हुआ, विक्षिप्त है। यह भगवान में भी लगता है और भोगों में भी लगता है। यह वासुदेव में भी लगता है और वासना में भी लगता है। ऐसे बात बनेगी नहीं। कुछ आगे और बढ़ना पड़ेगा। अब आगे यदि और बढ़ना है, इतना तो है कि ये करते समय, रजोगुण शांत होता जाएगा।

उपैति शान्तरजसं
ब्रह्मभूतमकल्मषम्।६/२७ ।

शान्त हो गया, ऐसा अनुभव आएगा। लेकिन **यदि आगे बढ़ना है, तो भक्ति में ही प्रवेश करना पड़ेगा।** हम चले हैं समाज से। समाज, परिवार, बुद्धि, मन, प्राण, ध्यान और अब भक्ति। पराकाष्ठा कहाँ होनेवाली है? ये भक्ति, **भक्ति का अंतिम शिखर शरणागति और शरणागति** से वो स्थिति जो अन्य किसी भी सिद्ध महात्मा को प्राप्त हुई है।

(अगले अंक में देखेंगे – ''योग का शिखर भक्ति''।)

*****

स्वामी स्वरूपानंद वेदविद्यालय का लोकार्पण समारोह

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के ३४ वें वेदविद्यालय का शुभारम्भ महाराष्ट्र में कोल्हापुर जिले के समीप कृष्णा नदी के पावन पुलिन पर बसे दत्त सम्प्रदाय के तीर्थक्षेत्र 'नृसिंहवाडी धाम' में गत नवरात्री में 'स्वामी स्वरूपानंद वेदविद्यालय' के नाम से शुभारम्भ किया गया।

श्री दत्तात्रेय भगवान की कृपा से विद्यालय को सुचारू रूप से संचालित करने एवं वैदिक छात्रों की सुविधा हेतु पुणे के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री विजय जी कुलकर्णी ने अपनी नवनिर्मित निजी वास्तु विद्यालय को समर्पित की। श्रीमान विजय जी केवल इतने बड़े अनुदान से ही संतुष्ट नहीं हुए; अपितु विद्यालय के संचालन में होने वाले सर्म्पूण व्यय में से आधा व्यय स्वयं वहन करने का दायित्व भी स्वीकार किया। भारतवर्ष के ऐसे महान दानदाताओं के सहयोग से ही महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में वेदविद्या की पुनः स्थापना कर रहा है।

श्री विजय जी के इस सत्संकल्प को दत्तात्रेय भगवान् के चरणों में समर्पित करने का सुअवसर खोज रहे थे, ताकि पूज्य गुरुदेव भी इस समारोह में उपस्थित रह सकें, वह अवसर समीप आया। गीता परिवार, जयसिंगपुर द्वारा पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से दिनांक २६ से २९ नवम्बर २०१८ की अवधि में 'श्री गणेश कथा' का भव्य आयोजन किया गया। इस कथा में जाने से पूर्व पूज्य गुरुदेव को समय अनुकूल था, यह जानकर दिनांक २५ नवम्बर २०१८ को 'स्वामी स्वरूपानंद वेदविद्यालय' के दत्तार्पण समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

दिनांक २५ नवम्बर को प्रातःकाल से श्रेष्ठ वैदिक ब्राह्मणों के द्वारा 'दत्तयाग' का आयोजन हुआ। तत्पश्चात् सायंकाल में 'विद्यालय दत्तार्पण समारोह' का शुभारम्भ दीपप्रज्वलन एवं क्षेत्रस्थ वैदिकों के मंत्रघोष के साथ किया गया। इस अवसर नर स्वामी स्वरूपानंद वेदविद्यालय के छात्रों ने अपने सुमधुर स्वरों में 'वेदव्यास वंदना' का भी गान किया। इसके पश्चात् दानवीर श्री विजय जी कुलकर्णी, क्षेत्रीय अभिभावक श्री दत्तात्रेय रुक्के, वेदमूर्ति श्री अवधूत रुक्के, पुजारी श्री पांडुरंग जी रुक्के, पुजारी श्री दिलीप जी माने एवं उपस्थित सभी वेदपाठी ब्राह्मण तथा स्वामी स्वरूपानंद वेदविद्यालय के मुख्याध्यापक श्री अक्षय जी टाकलकर आदि लोगों को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव आचार्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के द्वारा आशीर्वचन कहे गये। ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित 'पसायदान' प्रार्थना के साथ कार्यक्रम को विराम दिया गया।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के

सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय, आलंदी को भारतात्मा पुरस्कार

समाधिस्थ संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज (माउली) के प्रति पूज्य गुरुदेव की बड़ी आस्था है। ज्ञानेश्वर महाराज ने वेदों को विश्वमाता कहकर पुकारा। श्री महाराज जी की पवित्र भूमि अंलकापुरी, आलंदी में स्थित सद्गुरु निजानंज महाराज के पवित्र आश्रम 'चैतन्य आश्रम' में पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के द्वारा १९९० में 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' की स्थापना कर १९९१ में दशहरे के पावन अवसर पर 'सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय' के नाम से प्रतिष्ठान के प्रथम वेदविद्यालय का शुभारम्भ हुआ। आरंभ में यहाँ केवल शुक्ल यजुर्वेद की माध्यंदिन शाखा का अध्ययन करवाया जाता रहा। धीरे-धीरे ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा से प्रतिष्ठान के कार्यों में अद्भुत गति आई। एक विद्यालय से आरंभ हुआ प्रतिष्ठान का वेद कार्य संपूर्ण भारत में फैल गया। वर्तमान में जम्मू से लेकर इंफाल (मणिपुर) तक ३४ वेदविद्यालयों का संचालन प्रतिष्ठान कर रहा है। आलंदी का विद्यालय तो मानों इन समस्त वेदविद्यालयों का केन्द्र ही है। आधुनिक समस्त सुविधाओं से परिपूर्ण इस विद्यालय में दिव्य अध्ययन कक्ष, यज्ञशाला, छात्रावास, गुरुनिवास, भव्य ग्रंथालय एवं सुन्दर वाटिका से सुशोभित यह विद्यालय वास्तव में अलकापुरी (आलंदी) का अलंकरण ही है।

देश का सर्वोच्च वैदिक पुस्कार

महान विभूतियों की पदरज से पुनीत :-

यह विद्यालय कांची पीठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्य प्रातःस्मरणीय ब्रह्मलीन स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज, गुरुस्वामी महामंडलेश्वर सत्यमित्रानन्द जी महाराज, परम पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी गुरुशरणानंद जी महाराज, पूज्य आचार्य स्वामी धर्मेन्द्र जी महाराज जैसे महान विभूतियों के पदस्पर्श से पुनीत है। अनेक संतों के साथ-साथ अनेक राजनेताओं ने इस

विद्यालय के वेदज्ञ ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद प्राप्त किये है।

देश को कई वेदज्ञ, वेदाध्यापक व घनपाठी समर्पित :–

वेदविद्यालय के साथ–साथ यहाँ संगणक, भाषा आदि विषयों का भी अध्ययन करवाया जाता है। गत २७ वर्षों में इस विद्यालय ने ३०० से अधिक वेदज्ञ छात्र, २५ वेदाध्यापक एवं ४ घनपाठी भारतमाता की सेवा में समर्पित किये हैं। विद्यालय परिवार शिक्षा के साथ–साथ संस्कारों का भी विशेष ध्यान रखता है। इसलिए समय–समय गीता परिवार के बाल संस्कार शिविर, संघ के शौर्य शिविर आदि आयोजन करता रहता है। यहाँ पर शिक्षित बालक भविष्य में अपना सर्वांगीण विकास कर कहीं पर उसे अपना मस्तक नीचे नहीं करना पड़े, इस प्रकार का प्रयास निरंतर किया जाता है। विद्यालय में अनेक छात्र अध्ययन पूर्णकर विभिन्न विद्यालयों में वेदाध्यापन, कथा प्रवचन, पौरोहित्य सेवा के माध्यम से देशसेवा कर रहे हैं।

आदर्श शिक्षण व्यवस्था :–

इस विद्यालय में प्रवेश पाने वाले छात्रों को भोजन, वस्त्र एवं शिक्षा आदि सारी व्यवस्थाओं का सम्पूर्ण विद्यालय परिवार वहन करता है। छात्रों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाता। पूज्य

स्वामीजी के उदारमना अनुयायियों एवं समाजसेवी महानुभावों के सहयोग से यह विद्यालय सुचारुरूप से चल रहा है। विद्यालय परिवार उन सभी उदारमना दानदाताओं का सदैव ऋणी रहेगा। वेदविद्यालय की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने हेतु संचालक मंडल का भी विशेष ध्यान रहता है। किसी भी विद्यालय को सुन्दर रूप देने में अध्यापकों का प्रथम सहयोग होता है। वास्तव में हमारे भूतपूर्व पूज्य अध्यापक वर्ग एवं वर्तमान अध्यापकों ने इस विद्यालय को उच्चतम बनाने में बहुत सहयोग किया है। हम समस्त संचालक मंडल, अध्यापक परिवार एवं व्यवस्थापक मंडल के निरंतर आभारी है।

पुरस्कार हेतु निर्णायक बिन्दु :–

समय–समय पर इस विद्यालय के अनेक अध्यापकों एवं छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त किये हैं। किन्तु विश्व हिन्दू परिषद के भूतपूर्व संरक्षक स्व. अशोक जी सिंघल की स्मृति में सिंघल फाउन्डेशन के द्वारा वेदविद्या के प्रचार–प्रसार हेतु सम्पूर्ण भारत में जो भी वेदविद्यालय संचालित हैं उनमें सर्वोत्कृष्ट विद्यालय को ''**भारतात्मा अशोक जी सिंघल सर्वोत्कृष्ट वेदविद्यालय पुरस्कार**'' से सम्मानित करने का निर्णय तो गत वर्षों में प्राप्त पुरस्कारों का मुकुट मणि है। यह पुरस्कार निम्न बिन्दुओं के आधार पर दिया जाता हैं।

१) छात्रों का वेदाध्यन एवं अध्ययन में प्रगति। २) अध्ययन एवं अध्यापन का तरीका। ३) छात्रों का वेद के अलावा अन्य विषयों का ज्ञान। ४) भोजन व्यवस्था ५) विद्यालय परिसर की स्वच्छता, छात्रों एवं अध्यापकों को दी जाने वाली सुविधाएँ। ६) छात्रावास की स्थिति एवं निवास व्यवस्था, भोजन व्यवस्था। ७) पुस्तकालय का विशेष निरीक्षण। ८) कार्यालयीन कामकाज एवं विद्यालय में चलाई गई योजनायें।

इन सभी कसौटियों पर खरा उतरने पर ''सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय'' को भारतात्मा पुरस्कार

... **शेष पृष्ठ ३२ पर**

धर्म क्या है?

संस्कार चैनल' को दिए गए एक साक्षात्कार में उपरोक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने कहा कि –

'धर्म शब्द अत्यंत गंभीर है और वास्तव में देखा जाए तो **मानव मात्र का धर्म एक ही है।** भिन्न-भिन्न उपासना संप्रदायों को धर्म कहना हमारे वेदों की दृष्टि से उचित नहीं है। वेदों ने उपासना संप्रदायों को धर्म नहीं कहा। उपासना संप्रदाय, धर्म के अंग होते हैं, लेकिन वे समग्र धर्म नहीं होते।

हम जब भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्मों के नाम लेते हैं, तब वह उन-उन विशिष्ट लोगों के द्वारा स्थापित उनके अपने-अपने मत होते हैं या संप्रदाय होते हैं।

धर्म शब्द का अर्थ जो संस्कृत भाषा में है, वह इन सब को लांघकर जाने वाला है। यह बात सत्य है कि उपासना संप्रदाय भी धर्म का एक अंग हैं, लेकिन धर्म शब्द उपासना संप्रदायों से अधिक व्यापक है । यह बात हमें सबसे पहले ध्यान में लेनी चाहिए ।

संस्कृत भाषा की दृष्टि से कहा जाए या हमारे महाभारत, रामायण, श्रीमद्भगवद् गीता आदि ग्रंथों के सहारे से कहा जाए, तो धर्म का अर्थ होता है, अपना-अपना कर्त्तव्य और इसीलिए अपने-अपने कर्त्तव्य पालन के ऊपर ही, भगवद् गीता आदि ग्रंथ बहुत जोर देते हुए दिखाई देते हैं।

वेदों में जो धर्म का विचार किया गया अथवा हमारी सारी परंपरा में जो धर्म शब्द पर विचार किया गया, उसमें दो आयाम प्रधान रखे गए हैं, वे हैं – **'अभ्युदय नि:श्रेयस सिद्धि स धर्मः'** अर्थात् जिससे इस लोक में सफलता से जिया जाए और परलोक में भी हमें उत्तम गति प्राप्त हो जाए, वही धर्म है।

मैं इसे दूसरे ढंग से रखता हूं, **अभ्युदय** का अर्थ है, भौतिक समृद्धि और **नि:श्रेयस** का अर्थ है, आंतरिक शांति। संसार में इन दोनों बातों को कौन नहीं चाहेगा? हमें भौतिक समृद्धि भी चाहिए और आंतरिक शांति भी। इस प्रकार भौतिक समृद्धि और आंतरिक शांति के जो उपाय हमारे ऋषियों के द्वारा बताए गए हैं, वही धर्म है।

अब इसमें भौतिक उन्नति के जो अनेक उपाय हैं, उन उपायों को हम अभी छोड़ देंगे; क्योंकि अभी प्रश्न का जो रुख है, वह आध्यात्मिक अथवा पारमार्थिक मतों को लेकर, संप्रदायों को लेकर है। तो उस दृष्टि से विचार करने पर हमें आत्म शांति देने वाले अथवा परलोक में उत्तम गति प्रदान करने वाले, ऐसे जो हमारे उपासना संप्रदाय हैं, उनको धर्म कहा जाता है।अब इसका निर्णय करते समय हम जब परम्परा को देखते हैं तो एक बात ध्यान में आती है कि बाकी सभी धर्म किसी न किसी ग्रंथ पर आधारित हैं और वे उन्हीं को मानने पर बहुत बल देते हैं। लेकिन वैदिक परंपरा ग्रंथ – विशेष को मानने की अपेक्षा सद्गुणों के जीवन में पालन पर अधिक बल देने वाला प्रवाह है।

भगवान मनु द्वारा दी गई धर्म की व्याख्या में जीवन मूल्यों का वर्णन है। इसमें दस सद्गुणों का वर्णन है। जिसके जीवन में ये दस सद्गुण हैं, वह धार्मिक है। ऐसा सीधा-साधा निर्णय दे दिया।

अत: जब -जब इस प्रकार की व्याख्या की जाएगी, तो विश्व के सारे के सारे धर्मों का समन्वय अपने आप हो जाएगा तथा कोई धर्म छोटा है अथवा बड़ा है, ऐसा कहने की नौबत नहीं आएगी।

(पाठक भी अपनी अध्यात्म संबंधी शंकाएँ हमें भेज सकते हैं। – संपादक)

शंका समाधान

सहनशीलता

बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् श्रीविश्वनाथ शास्त्री एक बार दूसरे विद्वानों से शास्त्रार्थ कर रहे थे। जब विपक्ष के विद्वान् शास्त्रार्थ में हारने लगे, तब उस पक्ष के एक विद्वान् ने सूँघने के तंबाकू की डिबिया खोलकर सारी तंबाकू श्रीविश्वनाथ शास्त्री के मुख पर फेंक दी। शास्त्री जी ने झटपट मुख पर पड़ी तंबाकू पोंछ डाली और हँसते हुए बोले- 'यह तो कुछ क्षण के लिये प्रसङ्ग के बाहर की बात हो गयी, अब हम लोग अपने मूल विषय पर विचार करें।'

शास्त्री जी का पाण्डित्य विपक्ष को पराजित कर पाता या नहीं, यह तो नहीं कहा जा सकता; किंतु उनकी सहनशीलता ने विपक्ष को तत्काल पराजित कर दिया। दूसरे पक्ष के विद्वान् लज्जित होकर उनसे क्षमा माँगने लगे।

विज्ञान भी यह मानता है कि

गायत्री मंत्र मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है !

गायत्री मंत्र :–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

मंत्र के शब्दार्थ

ओम–ब्रह्म/भूः – प्राणस्वरूप/ भुवः– दुःख नाशक/ स्वः – सुख स्वरूप/ तत्– उस/ सवितुः–तेजस्वी, प्रकाशमान/ वरेण्यं– श्रेष्ठ/ भर्गः – पाप नाशक/ देवस्य– दिव्य को, देने वाले को/धीमहि –धारण करें/धियो– बुद्धि / यः – जो / नः – हमारी / प्रचोदयात् –प्रेरित करें (सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें)।

सामान्य अर्थ

उस सुख स्वरूप, दुःख नाशक, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, प्राणस्वरूप ब्रह्म को हम धारण करते हैं, जो हमारी बुद्धि को (सन्मार्ग की ओर) प्रेरणा देता है।

गायत्री मंत्र और विज्ञान

आधुनिक वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर अब यह सिद्ध किया जा चुका है कि गायत्रीमंत्र का रोजाना नियमित जप करने से मनुष्य की बौद्धिक क्षमता का निश्चित रूप से विकास होता है। इस संबंध में जी० टी०वी० पर प्रसारित एक रिपोर्ट निम्न प्रकार हैः–

''एम्स'' के डॉक्टर्स और आई.आई.टी . के वैज्ञानिकों ने वर्षो तक रिसर्च करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि हर रोज कुछ समय तक लगातार गायत्री मंत्र का जाप करने से मनुष्य की बौद्धिक– क्षमता का अनंत विस्तार किया जा सकता है। यानि दिमाग की ताकत को बढ़ाया जा सकता है। 'एम्स' ने अपनी रिसर्च में MRI के जरिए दिमाग की सक्रियता की जांच करके इस बात की पुष्टि करदी है कि गायत्री मंत्र का जप करने से दिमाग की शक्ति का विस्तार होता है।

गायत्री मंत्र, ऋग्वेद के तीसरे मंडल के ६२ वें सूत्र में मौजूद दसवां श्लोक है। यह हजारों वर्ष पुराना वैदिक मंत्र है; जिसकी रचना त्रेतायुग में महर्षि विश्वामित्र ने की थी। इस मंत्र में ईश्वर का ध्यान करते हुए यह प्रार्थना की गई है कि ईश्वर हमें प्रकाश दिखाए और सन्मार्ग पर ले जाए।

वेदों पर रिसर्च करने वाले भारत और दुनिया के अनेक विद्वानों ने गायत्रीमंत्र को ऋग्वेद के सबसे प्रभावशाली मंत्रों में माना है । हमारे देश में सदियों से यह मान्यता है कि विद्यार्थियों को रोज इस मंत्र का जाप करना चाहिए; क्योंकि इससे दिमाग तेज होता है।

गायत्रीमंत्र पर एम्स की रिसर्च भी यही पुष्टि कर रही है । एम्स सन् १९९८ से गायत्री मंत्र पर रिसर्च कर रहा है । सबसे पहले वहाँ के डॉक्टरों ने २५ से ३० वर्षों के पुरुषों पर यह प्रयोग किया था और ९ महीनों तक यह रिसर्च की गई। इसके बाद ५ वर्षों तक इसके 'डाटा' का अध्ययन किया गया। इसके तहत दिमाग के आगे के हिस्से में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया गया। दिमाग के इस हिस्से को Prefrontal Cortex कहा जाता है । इस हिस्से का काम है– योजनाएं बनाना, समस्याओं का समाधान करना और जागरूक रहना।

'जी न्यूज' ने आगे विस्तार से बताया कि इस रिसर्च के लिए लोगों को दो ग्रुपों में बांटा गया था । पहले ग्रुप ने ३ महीने तक रोज १०८ बार गायत्री मंत्र का मन में जाप किया और दूसरे ग्रुप ने नहीं किया। जो लोग गायत्री मंत्र का जप कर रहे थे, उनके शरीर में खुशी के वक्त पैदा होने वाले केमिकल्स तेजी से बढ़ने लगे । इस तरह का एक केमिकल है 'गाबा'। इस केमिकल के कम होने पर नींद नहीं आती और डिप्रेशन जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं। लेकिन गायत्री मंत्र का जप करने से दूसरे ही हफ्ते में गाबा केमिकल तेजी से बढ़ने लगा और दिमाग में सक्रियता बढ़ाने वाले केमिकल्स की मात्रा भी पहले के मुकाबले अधिक हो गई । पांच हफ्ते तक किए गए M.R.I. यानी (मैग्नेटिक रिजोलेंस इमेजिन) की मदद से यह नतीजा निकला कि जिन लोगों ने गायत्री मंत्र का जप किया था, उनका दिमाग बहुत शांत और जागृत हो चुका था। अपने इस शुरुआती

... शेष पृष्ठ २४ पर

गायत्री मंत्र का सरलार्थ!

गायत्री मंत्र एक असीम सागर के समान है; जिसमें असंख्यों रत्न छिपे हैं। अनादि काल से विद्वान अथक परिश्रम कर इसमें छिपे रत्नों को खोजते रहे हैं। इसके एक–एक पद में ही नहीं, एक–एक अक्षर के अर्थ को खोजने में, जो जितना बड़ा विद्वान है, उसे उतनी ही अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा है। आचार्य श्रीराम शर्मा ने इसका सर्वसाधारण के लाभार्थ एक सामान्य अर्थ भी बताया है।

सामान्य अर्थ

''उस सुख स्वरूप, दुःख नाशक, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, प्राणस्वरूप ब्रह्म को हम धारण करते हैं, जो हमारी बुद्धि को (सन्मार्ग की ओर) प्रेरणा देता है।''

मंत्र के तीन पद

उल्लेखनीय है कि गायत्री मंत्र के इस अर्थ में ३ तथ्य प्रकट होते हैंः–

व्याहृति –ॐ ''भू र्भुवः स्वः'' में ॐ के, अर्थात ब्रह्म के, दिव्य गुणों का चिन्तन है।

(१) प्रथम पद–''तत्सवितुर् वरेण्यं'' अर्थात, उपरोक्त गुणों वाले ईश्वर के शरनागत होने की बात है।

(२) इसके द्वितीय पद–''भर्गो देवस्य धीमहि'' में परमात्मा के दिव्य तेज को अपने हृदय में धारण करने की बात है और (३) इसके तृतीय पद ''धियो यो नः प्रचोदयात्'' अर्थात, इसमें सद्बुद्धि की प्रेरणा हेतु प्रार्थना है ।

चिंतन का असाधारण महत्त्व

स्मरण रहे, इन तीनों ही बातों का असाधारण महत्त्व है; क्योंकि मनुष्य जिस दशा में विचार करता है, जिन वस्तुओं का चिंतन करता है, जिन तत्त्वों पर ध्यान एकाग्र करता है, वह सब धीरे–धीरे चिंतन करने वाले की मनोभूमि में स्थिति और वृद्धि को प्राप्त होते जाते हैं । विचार–विज्ञान के सारभूत सिद्धांतों के अनुसार हम चित्त को जिन बातों की ओर एकाग्र करेंगे, उसी दिशा में हमारी मानसिक ऊर्जा प्रवाहित होने लगती हैं और अपनी अद्भुत सामर्थ्य के द्वारा सूक्ष्म लोकों से ऐसे–ऐसे साधन, हेतु और उपकरण पकड़ लाती है, जिनके आधार पर उसी दिशा में मनुष्य को नाना प्रकार की गुप्त–प्रगट, दृश्य–अदृश्य सहायताएँ मिलती हैं और उस मार्ग में सफलताओं का तांता बंध जाता है।

चिंतन का ऐसा ही महत्त्व और माहात्म्य है। ध्यान–योग की महिमा किसी से छिपी नहीं है।

(१) अतः गायत्री मंत्र के प्रथम भाग में ईश्वर के अनंत गुणों में से कुछ ऐसे गुणों का चिंतन है, जो मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। आनंद, दुखों का नाश, श्रेष्ठता, तेज, निर्भयता एवं आत्मा की सर्व व्यापकता, ''आत्मवत सर्व भूतेषु'' की मान्यता पर जितना भी ध्यान एकाग्र किया जाएगा, मस्तिष्कः इन तत्वों की अपने में वृद्धि करेगा। मन इनकी ओर आकर्षित होगा, अभ्यस्त बनेगा और उसी आधार पर काम करेगा।

... शेष पृष्ठ २४ पर

पृष्ठ २३ का शेष ... (गायत्री मंत्र का सरलार्थ)

आत्मा की सच्चिदानंद स्थिति का चिंतन, दुःख –शोक रहित ब्राह्मी स्थिति का चिंतन, श्रेष्ठता, तेजस्विता और निर्मलता का चिंतन, आत्मा की सर्व व्यापकता का चिंतन यदि गहरी अनुभूति और श्रद्धा पूर्वक किया जाए, तो आत्मा एक स्वर्गीय दिव्य भाव से ओतप्रोत हो जाता है। आत्मा इस दिव्यानंद को विचार क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रखता, वरन क्रिया में लगाकर इसका सुदृढ़ आनंद भोगने की ओर कदम उठाता है।

(२) गायत्री मंत्र के दूसरे भाग में उपर्युक्त गुणों वाले तेज पुंज को, परमात्मा को, अपने में धारण करने की प्रतिज्ञा है : उस दिव्य गुणों वाले परमात्मा का केवल चिंतन मात्र किया जाए, सो बात नहीं, वरन गायत्री का, आत्मा का सुदृढ़ आदेश है कि उस ब्रह्म को, उस दिव्य–गुण संपन्न परमात्मा को, अपने अंदर धारण करें, उसे अपने रोम–रोम में ओत–प्रोत कर लें। परमात्मा को कण–कण में व्याप्त देखें और ऐसा अनुभव करें कि उन दिव्य–गुणों वाला परमात्मा हमारे भीतर–बाहर आच्छादित हो गया है और इन दिव्य गुणों में उस ईश्वरीय सत्ता में अपना 'अहम' पूर्ण रूप से, विलीन हो गया है। इस प्रकार की धारणा से, जितने समय तक मनुष्य ओत–प्रोत रहेगा, उतने समय तक उसे भूलोक में रहते हुए भी ब्रह्मलोक के आनंद का अनुभव होगा। यह अनुभव इतना गंभीर है कि आगामी जीवन में, बाह्य आचरणों में उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। उसमें सात्विक तत्वों की मंगलमय अभिवृद्धि न हो, ऐसा हो नहीं सकता।

(३) गायत्री मंत्र के तीसरे भाग में परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमारे लिए सद्बुद्धि की प्रेरणा करें, हमें सात्विक बुद्धि प्रदान करें।हमारे मस्तिष्क को कुविचारों, कुसंस्कारों, नीचवासनाओं, दुर्भावनाओं से छुड़ाकर सतोगुणी ऋतंभरा प्रज्ञा से, विवेक से, सद्ज्ञान से पूर्ण करें ।

> विचार-विज्ञान के सारभूत सिद्धांतों के अनुसार हम चित्त को जिन बातों की ओर एकाग्र करेंगे उसी दिशा में हमारी मानसिक शक्तियां प्रवाहित होने लगती हैं और अपनी अद्भुत सामर्थ्य के द्वारा सूक्ष्म लोकों से ऐसे-ऐसे साधन, हेतु और उपकरण पकड़ लाती है, जिनके आधार पर उसी दिशा में मनुष्य को नाना प्रकार की गुप्त-प्रगट, दृश्य-अदृश्य सहायताएँ मिलती हैं और उस मार्ग में सफलताओं का तांता बंध जाता है।

इस प्रार्थना के अंतर्गत बताया गया है कि प्रथम भाग में बताए हुए दिव्य गुणों को प्राप्त करने के लिए दूसरे भाग में बताई गई ब्रह्म धारणा के लिए इस तीसरे भाग में उपाय बता दिया गया है कि अपनी बुद्धि को सात्विक बनाओ, आदर्शों को ऊंचा

शेष पृष्ठ २६ पर

पृष्ठ २२ का शेष ... (गायत्री मंत्र और विज्ञान)

रिसर्च में निष्कर्ष निकालते हुए 'एम्स' की तरफ से यह कहा गया कि गायत्री मंत्र के माध्यम से इंसान की बौद्धिक–क्षमता में अनंत गुणा विस्तार किया जा सकता है। 'एम्स' का यह शोध अब भी जारी है और इसकी विस्तृत रिपोर्ट अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित की जाएगी।

गायत्री मंत्र भारत के महान ऋषियों की तपस्या का फल है। शास्त्रों में इसे बल और तेज को बढ़ाने वाला बताया गया है और यही बात ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ने अपने रिसर्च में स्वीकार की है। माना जाता है कि इस मंत्र का उच्चारण दिमाग को शांत करता है और यह शांति बेवजह नहीं है। इन वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि गायत्री मंत्र जादुई दवा की तरह काम करता है। इस रिसर्च के अनुसार

यदि नियम बनाकर गायत्री मंत्र का उच्चारण नियमित रूप से किया जाए, तो यह दिमाग की चेतना को सीमाओं से परे ले जाकर जगा सकता है।

'एम्स' के डॉक्टर ने बताया कि अगर मैं कोई भी ऐसी क्रिया करता हूँ कि जिससे मेरे शरीर में ''सिम्पेथेटिक एक्टिविटि'' कम हो जाए और ''पैरा-सिंपैथेटिक एक्टिविटी'' बढ़ जाए, यानी कि मेरे दिल की धड़कन कम हो जाए, मेरे रेस्पिरेट्री रेट कम हो जाए, मेरा स्किन रेजिस्टेंस बढ़ जाए तो मैं ''हीलिंग -मोड'' में चला जाता हूँ, तब मैं अपने ''कॉन्शसनेस'' से कनेक्ट हो जाता हूँ। उससे मैं, मेरे शरीर में जो दवाई (केमिकल) मांगूंगा वह स्वत: पैदा हो जाएगी। यह स्तर ''पेरासिंथेटिक स्टेट ऑफ माइंड'' कहलाता है और अगर मैं इसमें इतना ज्यादा डूब जाऊं कि मुझे देश-काल का भी ध्यान न रहे, तो मैं चौथी स्टेज ऑफ ''कांशसनेस'' (चेतना के चतुर्थ स्तर) में चला जाऊंगा, जिसे शास्त्र में ''तुरीय स्टेज आफ कॉन्शसनेस'' (तुरीय अवस्था) कहा जाता है। 'एम्स' के वैज्ञानिक और आई.आई. टी. हैदराबाद के प्रोफेसर ने मिलकर नौ महीनों तक इस रिसर्च को किया था।

मंत्रो के द्वारा बौद्धिक क्षमता का विस्तार मनोवैज्ञानिकों के लिए भी अध्ययन का विषय है। मस्तिष्क में एक हिस्सा है ''सेंट्रल कोटरेक्स'' जिसमें खास तौर से ''ओरबिटो फ्रेन्ट्रल कॉर्टेक्स'' जिसको ''एग्जिक्यूटिव ब्रेन'' भी कहते हैं जिसका काम है -- योजनाएं बनाना और उनकी क्रियान्विति करना तथा समय- समय पर विभिन्न निर्णय लेना आदि। जब हम परिवर्तित स्वस्थ जीवनशैली के साथ योग का अथवा मंत्रों का प्रयोग करते हैं, तो इससे शरीर के एक विशेष भाग में 'ब्लड सप्लाई' बढ़ जाती है। उस वजह से मस्तिष्क में सकारात्मक परिवर्तन होते हैं। इसे ''न्यूरोप्लास्टिसिटी'' कहते हैं। इसमें जैसे-जैसे रक्त की आपूर्ति बढ़ती है, ''न्यूरॉन'' में ग्रोथ फैक्टर आते हैं, जो अपनी नई-नई ब्रांचेज बनाते हैं और मनुष्य की चिंतन प्रक्रिया में लाभप्रद सिद्ध होते हैं।

करीब २० वर्षो से एम्स में गायत्री मंत्र पर शोध किया जा रहा है। इन्हीं के रिसर्च पेपर्स में प्रकाशित M.R.I. ग्राफ में यह भी देखा गया कि जिन लोगों ने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया, उनके दिमाग की तरंगों में एक लय आ गई; जबकि दूसरा ग्राफ उस ग्रुप का था, जिन्होंने गायत्री मंत्र का जाप नहीं किया। उनके दिमाग की तरंगे बेतरतीब और बिखरी हुई पाई गईं। मतलब साफ है कि कंट्रोल ग्रुप में एक सकारात्मक बदलाव देखा गया। ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जो गायत्री मंत्र का सेहत पर अच्छे प्रभावों का दावा करते हैं। एक छात्र ने मंत्र का प्रभाव बताते हुए कहा कि उसका ध्यान गलत बातों पर से हट कर पढ़ाई की ओर उन्मुख हो गया। हमारे यहाँ उपनयन संस्कार के समय विशेष रूप से गायत्री मंत्र की दीक्षा दी जाती है; क्योंकि इस मंत्र के जाप से एकाग्रता बढ़ती है, फलस्वरूप जिस क्षेत्र में आप उन्नति करना चाहे आपका 'आउटपुट' उस क्षेत्र में बढ़ने लगता है।

ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जो गायत्री मंत्र का सेहत पर अच्छे प्रभावों का दावा करते हैं। एक छात्र ने मंत्र का प्रभाव बताते हुए कहा कि उसका ध्यान गलत बातों पर से हट कर पढ़ाई की ओर उन्मुख हो गया।

गायत्री मंत्र हजारों वर्षों से अपनी शक्ति का एहसास पूरी दुनियाँ को करवा रहा है। इसकी ताकत न केवल भारतीय वैज्ञानिकों को ही समझ में आ रही है; अपितु जर्मनी के हैंबर्ग यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक भी इस पर रिसर्च कर रहे हैं। इसके अलावा अमेरिकन वैज्ञानिको ने दुनिया भर के मंत्रों को इकट्ठा कर वीडियो लाइब्रेरी में जांच की और उन्होंने रिसर्च के परिणाम में पाया कि गायत्री मंत्र से प्रति सेकंड ११०००० साउंड वेव्स पैदा हुईं। **रिसर्च में सभी मंत्रों में गायत्री मंत्र सबसे अधिक सशक्त साबित हुआ।** यानी एक तरह से देखा जाए तो हमारे प्राचीन मंत्रों पर दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने मोहर लगा दी है।

पृष्ठ २४ का शेष ... **(गायत्री मंत्र का सरलार्थ)**

उठाओ, उच्च दार्शनिक विचारधाराओं में रमण करो और अपनी तृष्णा एवं वासनाओं के इशारे पर नाचते रहने वाली बुद्धि को मानस लोक में से बहिष्कृत कर दो। जैसे-जैसे बुद्धि का कल्मष दूर होगा, वैसे ही वैसे दिव्य गुण संपन्न परमात्मा के अंशों की अपने में वृद्धि होती जाएगी और उसी अनुपात में लौकिक और पारलौकिक आनंद की अभिवृद्धि हो जाएगी।

गायत्री मंत्र के गर्भ में सन्निहित उपर्युक्त तथ्य में (१) ज्ञान, (२) कर्म और (३) उपासना तीनों ही विद्यमान हैं। (१) सद्गुणों का चिंतन ज्ञान है, (२) ब्रह्म की धारणा कर्म है और (३) बुद्धि की सात्विकता अभीष्ट प्राप्ति हेतु क्रिया-प्रणाली उपासना है ।

वेदों की समस्त ऋचायें इसी तथ्य को सविस्तार समझाने के लिए प्रकट हुई हैं। वेदों में 'ज्ञान', 'कर्म' और 'उपासना' ये तीन विषय हैं। गायत्री के बीज में भी इन्हीं तीनों का वर्णन व्यावहारिक, संक्षिप्त एवं सर्वांगपूर्ण है। इस तथ्य को, इस बीज को, सच्चे हृदय से, निष्ठा और श्रद्धा के साथ अंत:करण में गहरा उतारने का प्रयत्न करना ही गायत्री की उपासना है। इस उपासना से साधक का सब प्रकार कल्याण ही कल्याण है। (''गायत्री का मंत्रार्थ'' से साभार)

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

वेदविद्यालयों में छात्र प्रवेश सूचना

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संपूर्ण भारत में संचालित ३४ वेदविद्यालयों में गुरुकुल एवम् पाठशाला पद्धति से नि:शुल्क वेदों का अध्ययन कराया जाता है। साथ ही अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान, गणित, संगणक, (कम्प्यूटर) आदि विषय भी सिखाये जाते हैं। अध्ययन की कालावधि सात वर्षों की है।

प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र एवं अन्य जानकारी हेतु संपर्क

-: कार्यालय :-

'धर्मश्री' मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्त मंदिर मार्ग,

पुणे विद्यापीठ रोड, पुणे-411 016 महाराष्ट्र

दूरभाष: (020) 25652589, ईमेल : dharmashree123@gmail.com

मोबाईल नंबर

1) **श्री अनिल दातार –** 8275066572, 2) **वे.मू. श्री महेश नंदे –** 9890837979

तथा 3) **श्री अविनाश मोरे (मोरे काका)–** 9420900425

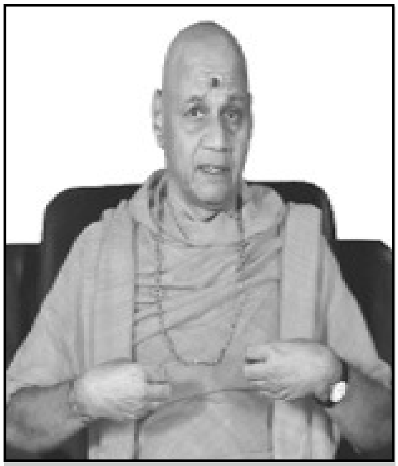

मीमांसा शास्त्र के आलोक में गीता दर्शन (२)

परमपूज्य गुरुदेव के प्रस्तुत प्रवचन के प्रथम भाग में हमने मीमांसा दर्शन के ६ लक्षणों के मानक पर गीता के मूल्यांकन के क्रम में प्रथम चार लक्षणों यथा – **उपक्रम – उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता** तथा **फलम्** के आधार पर गीता की समीक्षा देखी। इस अंक में उस प्रवचन का अगला भाग – यथा **अर्थवाद** एवं **उपपत्ति** विषयक विवेचन देखें।

अर्थवाद :–

गीता में अर्थवाद कहाँ है? प्रभु के शब्दों में 'गौण' कौन–सा, यह कहना भी एक साहस ही होगा। भगवान का एक–एक शब्द मंत्र रूप है, इसलिए प्रभु की वाणी का ही पाठ करना होगा, उसे ही कंठस्थ करना होगा । यह जागृत श्रुति है । ऐसा होने के बाद भी, जब हम ग्रंथ का अभ्यास शास्त्रानुसार ६ लक्षणों से करना चाहते हैं, तो हमें यहाँ कुछ गौण हैं क्या, यह देखना होगा। मैंने जब इस पर विचार किया, तब यह निश्चित था कि गीता का उपदेश मूलत: **'ज्ञानाधिष्ठित सत्कर्मशील भक्तिमय दिव्य जीवन योग है।'** यही तत्त्वचिंतन मुख्य है। इस आधार पर देखें, तो गीता का दसवाँ अध्याय ''विभूति योग'' व ११वां अध्याय ''विश्वरूपदर्शन योग'' इन दोनों का तत्त्वचिंतन में इतना महत्त्व नहीं है। अर्थात इनको अलग करने से भी गीता के मुख्य तत्त्वचिंतन में कोई बाधा नहीं आएगी और तत्त्वचिंतन पूरा होगा ।

उपरोक्त दोनों अध्याय मूल विषय को थोड़ा रोचक बनाते हैं। परमात्मा की विभूतियों का हम सहजता से अनेक भावों में चिंतन कर सकें, ये बताते हैं। मुख्य तत्त्व को इससे बाधा नहीं, पर इसके न होने से उसमें कोई अंतर भी नहीं आता है।

वैसे ही ''विश्वरूपदर्शन'' के प्रारंभ में अर्जुन कहता है कि, 'आपने जो कहा, उससे मेरा अज्ञान नष्ट हुआ।' भगवान अव्ययी, अविनाशी हैं, यह वह जानता है, पर उसका कौतुहल (उनका अविनाशी रूप देखने का) भगवान पूर्ण करते हैं। **इसे ज्ञानोत्तर भक्ति के रूप में देखा जा सकता है,** पर यह मूल तत्त्वचिंतन के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं है। अत: गीता का १०वाँ, ११वाँ अध्याय अर्थवाद के रूप में माना जा सकता है, ये गौण नहीं, पर नये भी नहीं। हाँ, यह मूलतत्त्व को रोचक जरूर बना रहे हैं।

उपपत्ति :–

यह ग्रंथ के तात्पर्य का निर्णय करने हेतु, अंतिम लक्षण है। मुख्य सिद्धांत को पुष्ट करने हेतु वही सिद्धांत ग्रंथ का मूल तत्त्व है, यह बताने के लिए जो तथ्य तर्क के साथ दिए जाएं, वही प्रक्रिया उपपत्ति है।

गीता का मुख्य सिद्धांत ज्ञानाधिष्ठित व्यवहार का है। भगवान

इसके आग्रही हैं। ज्ञान का त्याग करके गीता का चिंतन संभव नहीं है। इसे हम कुछ उदाहरणों से देख सकते हैं यथाः–

अध्याय ७ ''ज्ञान विज्ञान योग'' है। इसमें भगवान कहते हैं, 'मैं इस विज्ञान सहित तत्त्वज्ञान को कहूंगा, जिसको जानने के बाद कुछ जानना शेष नहीं रहेगा।''

''ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदंवक्ष्याम्यशेषत:।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यत्ज्ञातव्यमवशिष्यते ।।७/२''

इसमें परा व अपरा प्रकृति को समझाते हैं। माया से निकल कर आत्मतत्त्व तक ले जाते हैं।

अध्याय–९ में ः–

''न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः। ९/५''

कह कर, 'मैं समस्त भूतों का निर्माण, धारण व पोषण करता हूँ। सब मुझमें है, मैं सब में, पर वास्तव में मैं किसी में नहीं।' यह उत्पत्ति ज्ञान को सिद्ध करने हेतु है।

H अध्याय १३ में, जब क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का विचार समझाते हैं, तब एक विलक्षण परिचय देते हैं।

''अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।। (१३/११)

आत्म, अनात्म का ज्ञान हो और नित्य स्थित परमात्मा को ही देखना, यही ज्ञान है, इसे जान लें। इस अध्याय में, प्रभु के व जीव के बारे में ज्ञान देकर, अंत में कहते हैं, यह जानने वाला परमतत्त्व को प्राप्त होगा ।

H अध्याय १५ में क्षर अक्षर पुरुष व पुरुषोत्तम का ज्ञान देते हैं। वे कहते हैं, इस अक्षर का गोपनीय शास्त्र मैंने बताया, जिसे जानकर मनुष्य ज्ञानवान बनेगा।

गीता के आत्मज्ञान के मार्ग पर सत्कर्म, निष्काम कर्म, योग सब आते हैं और यह सब भक्ति रस में डूबे हुए आते हैं ।

गीता के तत्त्वज्ञान से, जीव सामान्य जीवन से ऊपर उठेगा । ''आहार, निद्रा, भय, मैथुन'' से ऊपर उठेगा, यह निश्चित है। हमें भगवान सत्कर्मशील, निरहंकारी, दैवीसंपत्ति युक्त बनाना चाहते हैं, जो ज्ञान से ही संभव है।

गीता हमें एक यात्रा करवाती है, एक अंतर यात्रा!! अंतरयात्रा का उद्देश्य स्वयं का उत्थान करना है। यह देहभाव से आत्मसाक्षात्कार की मानसिक यात्रा है। संसार के भवारण्य से जीवात्मा को बाहर निकालना होगा। भगवान गीता द्वारा यही यात्रा करवाना चाहते हैं। हम कहाँ हैं, आगे कहाँ जाना है? सोचें और उस प्रकार की व्यवस्था करें। आज हम देहभाव में हैं, हमारा निश्चय है कि– ''मैं देह हूँ''– यह **अन्नमयकोष**। इसमें मैं व मुझसे जुड़ा हुआ मेरा परिवार एवं सामान। पहले इसे स्वच्छ करेंगे, तो ही यात्रा आगे प्रारंभ होगी। संसार से छूटना है, तो पहले उसे अच्छे से पूर्ण करो । मन में अभिलाषा, चिंता लेकर आगे जाना नहीं होगा। ''समर्थ'' कहते हैं, ''आधी प्रपंच करावा नेटका''– प्रपंच अच्छे से करते – करते फीका लगने लगता है। जब किसी कार्य में संतोष होता है,तो उसकी चाह कम होती है। इसके लिए शरीर निरोग भी होना चाहिए। इस दृष्टि से भगवान अन्नमयकोष को अच्छा रखने के लिए हमें युक्त आहार, सात्विक आहार की बात बताते हैं। अन्नमयकोष की शुद्धि व स्वस्थ होना आवश्यक है। जब तक, जो प्राप्त करना है, वह प्राप्त, जो ज्ञात करना है, वह ज्ञात और जो कुछ करना है, वह कर लें। इसके बाद फिर देह जाए तो जाए!!

यह तो आत्मा की यात्रा का टिकट है। यात्रा पूर्ण होने तक साथ रहनी चाहिए।

भगवान हमारे **प्राणमयकोष** के प्रति आग्रही हैं। उसी से चयापचय है। प्राणमयकोष में क्रियाशीलता है, संवेदना नहीं। इन प्राणों को स्थिर करना आवश्यक है।

मनोमय कोष– भगवान कहते हैं, अस्थिर मन को आत्मतत्त्व की ओर ले जाना संभव नहीं। मन चंचल है, पर भगवान कहते हैं, इतना भी चंचल नहीं, पर चलम् है इसे अचल बनाना होगा। इसके लिए वैराग्य का अभ्यास करना होगा। यह स्थिर होगा तब मन के पार जाने की स्थिति होगी।

विज्ञानमय कोष– मन के संकल्प विकल्प दूर हों, बुद्धि स्थिर रहे, इसलिए साधक को प्रयास करने होंगे। बुद्धि व्यावसायात्मिका न हो, तब स्थितप्रज्ञता होगी, तत्पश्चात् आगे की यात्रा आनंदमय कोष तक की होगी, जहाँ अलौकिक सुख होगा। वैराग्य इसके भी आगे, परमानंद तक ले जाएगा।

गीता हमें यही यात्रा करवाना चाहती है। इसी आनंद– यात्रा की तैयारी हमें करना चाहिए; क्योंकि आनंद प्राप्ति ही हमारा परम–चरमलक्ष्य है।

– श्रीमती जाह्नवी केलकर

जयसिंहपुर में

विघ्नहर्ता श्री गणेश कथा- एक दृष्टि में

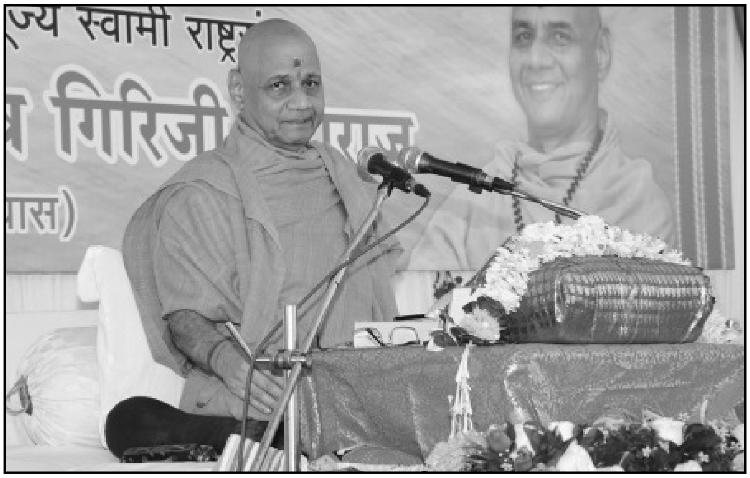

गीता परिवार, जयसिंगपुर के कार्य से धर्मश्री के सभी पाठक भली-भाँति परिचित हैं। गीता परिवार, जयसिंगपुर की शाखाध्यक्षा श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी ने गत १० वर्षों पहले छोटे से शहर जयसिंगपुर से इस कार्य का आरंभ किया। आज यह कार्य केवल जयसिंगपुर तक सीमित न रहकर संपूर्ण कोल्हापुर जिले तक पहुँच गया। दीदी की निष्काम सेवा ने पूज्य गुरुदेव को इतना प्रभावित किया कि अपने अति व्यस्ततम समय में चार दिन गीता परिवार के कार्य की अर्चना करने हेतु पूज्यवर जयसिंगपुर पधारे; माध्यम बना ''विघ्नहर्ता श्री गणेश कथा''।

पूज्यवर ने कथा के रूप में विघ्नविनाशक श्री गणेश भगवान की लीला का दिव्य वर्णन जयसिंगपुर शहर में पहली बार किया। गीता परिवार द्वारा आयोजित इस गणेश कथा का आरंभ गीता परिवार की मुख्यशाखा, संगमनेर के आदर्शों पर आधारित था। इस छोटे से शहर में भव्य शोभायात्रा सबको आश्चर्य चकित कर रही थी। कथाग्रंथ को गजराज के ऊपर विराजित किया गया। गजराज इस शोभायात्रा की शोभा को द्विगुणित कर रहा था। मंगल कलशों को धारण किए अनेक वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित माताएं, बहनें ऐसी लग रही थी मानो स्वर्ग से देवियाँ उतर आई हों, साथ ही दिव्य झांकियां एवं शहर के विद्यालयों के बालक-बालिकाएं विभिन्न वाद्यों की मधुर ध्वनि से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। गीता परिवार के नित्यवर्ग में आने वाले छात्र गीता के श्लोक गा रहे थे। पीछे-पीछे चार घोड़ों से सुसज्जित रथ में विराजमान पूज्य गुरुदेव संपूर्ण शोभायात्रा पर अपनी कृपादृष्टि की वर्षा कर रहे थे।

दिनांक २६ नवम्बर २०१८ को कोल्हापुर जिले के दानवीर व्यक्तित्व श्री दानचंद जी विनोद्‌कुमार जी घोड़ावत परिवार द्वारा निर्मित कथानगरी में 'गणपति बाप्पा मोरया' की दिव्य ध्वनि के साथ शोभायात्रा का प्रवेश हुआ। ग्रंथ पूजन एवं आरती के पश्चात् पूज्य गुरुदेव की पावन उपस्थिति एवं पं. रेणुकादास जी पाठक के आचार्यत्व में चल रहे गणेश यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस कथा एवं यज्ञ के मुख्य यजमान श्री दीपक जी बिहाणी रहे।

प्रथम दिन की कथा आरंभ होने से पूर्व गीता परिवार के छात्रों द्वारा 'तोटकाष्टकम्' स्तोत्र का अभिनय के साथ पाठ किया गया। गीता परिवार का परिचय श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी दीदी ने दिया एवं कार्यक्रम की प्रस्तावना डॉ. राजेन्द्र जी पाटिल (यड्रावकर) ने प्रस्तुत की। पं. अशोक पारीक भैयाजी ने पूज्य गुरुदेव के संक्षिप्त परिचय के माध्यम से पूज्यवर के कार्यों का दर्शन करवाया। तत्पश्चात विघ्नहर्ता श्री गणेश कथा का शुभारम्भ हुआ। कथा के प्रथम

दिन से ही कथा पांडाल खचाखच भरा हुआ था।

कथा के दूसरे दिन प्रातःकालीन सत्र में शहर के विभिन्न छात्र-छात्राओं एवं युवक-युवतियों हेतु पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से ''आप ही अपने जीवन के निर्माता'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। दोपहर के सत्र में गीता कंठस्थ करने वाले छात्रों की परीक्षा लेकर उन्हें पुरस्कृत किया गया। तत्पश्चात कथा का आरंभ हुआ। तीसरे दिन के प्रातःकालीन सत्र में गीता परिवार के १७०० बालकों द्वारा योगसोपान भाग -२ का प्रस्तुतिकरण हुआ। इस कार्यक्रम को देखकर सभी लोग चकित रह गये तथा गुरुदेव ने हर्षित हृदय से प्रमिला दीदी एवं छात्रों को मंगल आशीर्वाद दिया। इसी दिन रात्रि में गीता परिवार के छात्रों ने गीता परिवार के कार्यो पर आधारित 'सृजन साधना' नाटिका प्रस्तुत की।

चतुर्थ दिन की प्रातःकालीन

प.पू. महाराजश्री गीता परिवार, जयसिंहपुर की शाखाध्यक्षा श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी को ''धर्म सेवा प्रसाद पुरस्कार'' प्रदान करते हुए।

बेला में संतपूजन एवं सत्संग का दिव्य आयोजन किया गया; जिसमें पूज्य गुरुदेव, जगद्गुरु शंकराचार्य, करवीर पीठ, कोल्हापुर सहित महाराष्ट्र के विख्यात संतों ने अपने मंगल आशीर्वाद देकर गीता परिवार के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कथा में जयसिंगपुर की समस्त जनता के समक्ष पूज्य गुरुदेव के करकमलों द्वारा संतश्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल का ''संत ज्ञानेश्वर पुरस्कार'' आदरणीया प्रमिला दीदी को प्रदानकर सम्मानित किया। गीता परिवार, जयसिंगपुर के द्वारा बड़ा ही अनोखा कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम को संपन्न करवाने में अनेक कार्यकर्ताओं ने तन, मन, धन से सहयोग किया, तभी गिरिराज गोवर्धन तुल्य विशाल कार्य सुचारुरूप से संपन्न हो सका। गीता परिवार की ओर से सभी दानदाता, सहयोगी कार्यकर्ताओं का बहुत बहुत अभिनन्दन एवं धन्यवाद।

धर्मश्री अन्नकूट महोत्सव, २०१८

प्रतिवर्ष कि भांति इस वर्ष भी 'धर्मश्री अन्नकूट महोत्सव' दि. ८ नवम्बर २०१८ सायं ४ से ७ के शुभकाल में पू. गुरुदेव के सान्निध्य में बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम श्री सचिन जी कालानी एवं लोहिया परिवार द्वारा गोवर्धन जी की विधिवत् पूजा की गई तथा पू. गुरुदेव के पावन करकमलों द्वारा गौमाता एवं ब्राह्मण पूजन किया गया। इस महोत्सव में परभणी के सुप्रसिद्ध गायक श्री कृष्णराज लव्हेकर और सहयोगियों ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी। गीता परिवार की कार्यकर्ता सौ. वेदिका कुलकर्णी, सौ. मृणाल विप्रदास ने भगवान शंकराचार्य द्वारा रचित 'भज गोविन्दम' संस्कृत गीत एवं 'चन्दन है इस देश की माटी' देशभक्ति गीत के द्वारा कार्यक्रम का आरंभ किया। तत्पश्चात पुणे शहर में विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे गणमान्य मान्यवरों को पूज्य गुरुदेव की पावन उपस्थिति में सम्मानित किया गया। श्री दत्तात्रय जी काले, श्री हरिप्रसाद जी व्यास, श्री रविन्द्र जी गुर्जर, सौ. शांता जी भेड़ा, अधिवक्ता श्री सखाराम जी पाटिल, सौ. स्वाति वालिम्बे एवं श्री अमोल जी दायमा को सम्मानित किया गया। गीता परिवार पुणे की ज्येष्ठ कार्यकर्ता सौभाग्यवती वेदिका कुलकर्णी का पू. गुरुदेव ने सम्मान किया। तत्पश्चात् पूज्यवर ने उपस्थित भक्तों को मंगल आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात आरती एवं दीपोत्सव हुआ तथा पसायदान एवं महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

राज्यस्तरीय क्रीडा योगासन प्रतियोगिता में श्री गणेश समन्वय आश्रम के पाँच विद्यार्थियों का चयन

पूज्य महाराजश्री के संरक्षण में कार्यरत एक अन्य प्रन्यास, **संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल, पुणे** द्वारा संचालित **श्रीगणेश समन्वय आश्रम** के विद्यार्थियों ने राज्यस्तरीय क्रीडा योगासन प्रतियोगिता में दिनांक २२ अगस्त २०१८ सोमवार को विभागीय क्रीड़ा संकुल, गारखेडा (संभाजीनगर) में आयोजित प्रतियोगिता में यशस्वी विजय प्राप्त की।

यह प्रतियोगिता तीन गटों में आयोजित की गई; जिसमें आयु निर्धारित की गई। प्रथम गट में १४ वर्ष तक की आयु के बालकों ने भाग लिया जिसमें 'गणेश समन्वय आश्रम' के सप्तम कक्षा का प्रतिभावान छात्र सुग्रीव हाके ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। द्वितीय गट में १७ वर्ष की आयु में आश्रम के नवम कक्षा के छात्र सुदाम घाडगे ने पंचम स्थान प्राप्त किया। १९ वर्ष की आयु के छात्रों में राजेंद्र रोमन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उसी प्रकार लाखुन काम्बले चौथा, अभिषेक मासाल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी विद्यार्थियों को उचित प्रशिक्षण देने के लिए श्री विनायक वझे सर, श्री गवते सर, श्री भालेराव सर, एवं बरकसे सर ने बहुत मेहनत की। इस प्रतियोगिता में भाग दिलाने हेतु श्री इगड़े सर एवं लोहिया सर का विशेष योगदान रहा। प्रतियोगिता में उत्तम यश प्राप्त करने पर विद्यालय परिवार के सांचालक श्री के.पी. थिगले नाना, श्री रामेश्वर जी कासट, श्री निवास जी चरखा, श्री गौतम जी खटोड, श्री विजय कुमार जी लाहोटी, श्री पटेल, श्रीमती बी.आर. राठी, तथा आश्रम के व्यवस्थापक श्री माधव कालकूटे सर, श्री गायके सर, श्री तौर सर, श्री राउत सर, श्री पाठक सर, श्री पुरोहित सर, श्री विष्णु बालेकर, श्री दुधाटकर एवं सभी अभिभावकों ने सभी विद्यार्थियों का अभिनन्दन किया।

निकुंजवासी विनोदजी अग्रवाल : सादर श्रद्धांजलि

सुप्रसिद्ध भजन गायक स्व. विनोद जी अग्रवाल का दिनांक ६ नवम्बर २०१८ को प्रातः ४ बजे अचानक हृदय गति रुक जाने के कारण मथुरा के नयति मेडिसिटी अस्पताल में आकस्मिक निधन हो गया। स्व. विनोदजी का जन्म दिनांक ६ जून १९५५ को दिल्ली में हुआ। घर में निरंतर कृष्ण भक्ति का वातावरण होने के कारण, बाल्यावस्था से ही आपको संगीत व भगवद्‌भक्ति में रस आने लगा। आपने मात्र १२ वर्ष की अल्पायु में हारमोनियम बजाकर भजन गाने सीख लिए।

गृहस्थाश्रम धर्म निभाकर, आपने श्रीधाम वृन्दावन में ही नित्य निवास करने का निर्णय लिया। भगवान बांकेबिहारी जी के सान्निध्य में रहकर आपने भजन सेवा के माध्यम से सम्पूर्ण भारत के साथ-साथ जर्मनी, ब्रिटेन, इटली, सिंगापुर, स्विटजरलैंड, दुबई, थाईलैंड इत्यादि देशों का भ्रमणकर भारत का नाम रोशन किया तथा कृष्णभक्ति की पताका सम्पूर्ण विश्वमें फहराई। आपको लोग संकीर्तन सम्राट कहते थे। आपकी विशेषता थी कि आप तीन घंटे बिना संगीत को रोके, लगातार राग बदल-बदलकर भजन गाते रहते थे। कृष्णभक्ति में डूबकर भजन गाते समय निरंतर अश्रुओं से गंगा बहती रहती थी। आपके भावपूर्ण गायन ने श्रोताओं को भी अपने भाव में डुबाकर रखा। आपके द्वारा गाये गये अनेक भजन आज भी भक्तों के हृदयों को स्पर्श कर रहे हैं। आपको हिंदी, उर्दू, पंजाबी, अंग्रेजी एवं व्रज भाषा का सम्यक ज्ञान था। सम्पूर्ण विश्व में एक भक्त गायक के रूप में कीर्ति थी। आपने अपने जीवन में १५०० से ज्यादा कार्यक्रम किए। ऐसे महापुरुष के अचानक संसार से विदा हो जाने पर भक्ति मार्ग के लोगों की बड़ी क्षति हुई है। गोविन्द के चरणों में प्रार्थना है कि आपको गौलोक धाम में नित्य निवास मिले। धर्मश्री परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि।

पृष्ठ १४ का शेष.. ***(भीष्म पुरस्कार)***

नामानुसार अपने इस दिव्यतम लेखन को ''भीष्म प्रकल्प'' के नाम से प्रकाशित किया। आपके द्वारा संपन्न इस विराट कार्य से प्रभावित होकर कांची कामकोटि शंकराचार्य पीठ की ओर से आपको 'इतिहास भूषण' पद से विभूषित किया गया।

ऐसे श्रेष्ठ महापुरुष स्व. डॉ. श्रीपाद दत्तात्रेय कुलकर्णी जी की स्मृति प्रीत्यर्थ ''संतश्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल'' द्वारा पहली बार 'भीष्म पुरस्कार' के नामसे पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले, योगपीठ के संस्थापक योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज के सहयोगी, आयुर्वेदज्ञ परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी को यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। आचार्य बालकृष्ण जी ने आयुर्वेद के क्षेत्र में अनेक शोध, लेखन, औषधि-निर्माण, वितरण एवं आयुर्वेद पर आधारित जीवनशैली का निर्माण कर जनजागरण हेतु दिव्य कार्य किया है और अन्यों को भी इस अभियान के साथ जोड़कर अनेक वर्षो से खोये हुए भारत के इस पुरातन आयुर्वेद विज्ञान को केवल भारत में ही नहीं; अपितु सम्पूर्ण विश्व में पुर्नस्थापित कर एक नई क्रांति का निर्माण किया है। श्रद्धेय आचार्य जी के इस अद्भुत कार्य की अर्चना करने हेतु उन्हें 'भीष्म पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया।

यह पुरस्कार समारोह सोमवार दिनांक १० दिसम्बर २०१८ को सायं ५:३० बजे ''लोकशाहीर अन्नाभाऊ साठे सभागृह' पुणे-सातारा रोड पर आयोजित किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम संतश्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के संस्थापक परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के सान्निध्य में पद्मभूषण डॉ. श्री कांतिलाल जी संचेती के करकमलों द्वारा पुणे शहर की महापौर सौ. मुक्ता तिलक के आतिथ्य में संपन्न हुआ। विशिष्ट उल्लेखनीय है कि इस महत्त्वपूर्ण पुरस्कार के साथ समर्पित किये गए संस्कृत में काव्यात्मक मानपत्र की रचना संस्कृत के परम विद्वान युवाकवि श्री प्रणव जी पटवारी ने की है।

पृष्ठ २० का शेष.. ***(भारतात्मा पुरस्कार)***

से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार समारोह

पुरस्कार प्रदत्त समारोह का आयोजन दिल्ली के 'चिन्मय मिशन सभागृह' में दिनांक २५ सितंबर २०१८ को परम् पूज्य योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज एवं परम पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज के पावन सान्निध्य में मान्यवरों के करकमलों द्वारा विद्यालय के वर्तमान अध्यक्ष श्री श्रीवल्लभ जी व्यास, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के न्यासी श्री दत्तात्रेय काले सर, डॉ. प्रकाश जी सोमण, वेदमूर्ति महेश जी नंदे एवं प्रधानाचार्य वेदमूर्ति श्री मुकेश जी दंडवते, अध्यापक वेदमूर्ति श्री भगवान जी जोशी को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार प्राप्त कर विद्यालय परिवार अभिभूत हुआ।

गुरुदक्षिणा

''शिवाजी! तू बल की उपासना कर, बुद्धि को पूज, संल्पवान बन और चरित्र की दृढ़ता को अपने जीवन में उतार, यही तेरी ईश्वरभक्ति है। भारतवर्ष में बढ़ रहे पाप, हिंसा, अनैतिकता और अनाचार के यवनी-कुचक्र से लोहा लेने और भगवान की सृष्टि को सुन्दर बनाने के लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।'' समर्थगुरु रामदास ने समझाया।

''आज्ञा शिरोधार्य देव! किंतु यह तो गुरुदीक्षा हुई, अब गुरुदक्षिणा का आदेश दीजिए।'' शिवाजी ने दृढ़ किंतु विनीतभाव से प्रार्थना की।

गुरु की आँखें चमक उठीं। शिवाजी के शीश पर हाथ फेरते हुए बोले, ''गुरुदक्षिणा में मुझे एक लाख शिवाजी चाहिए, बोल, देगा?''

''दूँगा, गुरुदेव ! एक वर्ष एक दिन में ही यह गुरुदक्षिणा चुका दूँगा।'' इतना कहकर शिवाजी ने गुरुदेव की चरण-धूलि ली और महाराष्ट्र के निर्माण में जुट गए।

।। श्री गुरुः शरणम् ।।

कांचीपुरी में भागवत सप्ताह

हमारी पवित्र सप्तमोक्षपुरियों में शिवकांची तथा विष्णुकांची का एकत्र दर्शन करने वाली 'कांचीपुरी' अनोखी है। माँ कामाक्षी, भगवान् एकाम्रनाथ तथा भगवान् वरदराज की तथा गुरुपरंपरा की विलक्षण कृपा प्राप्त करने का सुअवसर सन्निकट है।

कांची कामकोटि शंकराचार्य पीठ के प्रातःस्मरणीय ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी श्री जयेंद्र सरस्वती जी महाराज की महासमाधि के प्रथम वर्षपूर्ति समाराधना निमित्त–समाधि–वृंदावन संमुख **प.पू. आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी** के श्रीमुख से श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन दि. 11 से 18 मार्च 2018 तक सुनिश्चित है। प्रथम दिन माहात्म्य तथा दिनांक 12 से 18 मार्च तक सप्ताह कथा होगी। दिनांक 19 मार्च को ब्रह्मलीन स्वामीजी महाराज की समाराधना है।

इस भव्य दिव्य आयोजन में 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के 108 ब्रह्मचारी वैदिक बटुओं द्वारा भागवत पारायण सेवा प्रदान होगी। इस दिव्य भूमि में श्रीगुरु सेवा के रूप में श्रीमद्भागवत की एक पोथी के पारायण की सेवा का लाभ अपने पितरों के उद्धार तथा अपनी मनोकामना पूर्ति के लिये करना श्रेष्ठतम पुण्यकार्य है। अतः पोथी यजमान के रूप में सहभागी होने का सौभाग्य प्राप्त करें।

- ✻ एक श्रीमद्भागवत पोथी पारायण की सेवा का शुल्क रु. 31,000/- निर्धारित किया गया है। पोथी यजमान कृपया आवेदनपत्र भरकर भेंजे।
- ✻ इस रु. 31,000/- राशी से पूजा सामग्री तथा पंडित दक्षिणा तथा विप्रभोजन की व्यवस्था होकर बची हुई शेष राशि गुरु सेवा के रूप में 'कांची शंकराचार्य पीठ' को समर्पित की जाएगी।
- ✻ इस राशि का ड्राफ्ट अथवा चेक 'श्रीकृष्ण सेवा निधि' के नामसे पुणे कार्यालय को भेजे अथवा RTGS-(Shrikrishna Seva Nidhi, Central Bank of India, A/c No.-3480385252, BR. Retail Assets Pune, **IFSC CODE:** CBINO284625) करके उसकी जानकारी अपने नाम, पते के साथ कार्यालय को भेजें।
- ✻ सभी पोथी यजमान एवं श्रोताओंके लिये पेयपान, अल्पाहार तथा दोनों समय के प्रसाद–भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होगी।
- ✻ सभी की निवास व्यवस्था शुल्क देकर ही हो सकेगी। प्रतिदिन रु. 800/- अथवा रु.1000/- से रु.1500/- से रु. 2000/- तक की निवास व्यवस्था उपलब्ध रहेगी। कृपया आवश्यकतानुसार ग्रहण करें। पूर्व सूचना से ही आरक्षण निश्चित किया जा सकता है।
- ✻ **दिनांक 11 मार्च को सबेरे तक कांचीपुरम पहुँचना चाहिये।**
- ✻ **दिनांक 18 मार्च सायंकाल के बाद वापसी प्रस्थान कर सकते है।**
- ✻ जो पोथी यजमान पूर्ण समय कथा के लिये नहीं रह सकते वे आरंभ में आकर संकल्प पूजा में सहभागी हो सकते हैं। अथवा सुविधानुसार किसी भी दिन पधार सकते हैं।
- ✻ जो पोथी यजमान बनकर पुण्यलाभ तो चाहते है पर कांची आना संभव नहीं है उनके नाम गोत्र से पूजा पंडित जी द्वारा संकल्प करके की जाएगी।
- ✻ जो पोथी यजमान नहीं बनते है पर अन्नदान अथवा गुरुसेवा में दानराशी प्रदान करना चाहते है वे अपनी श्रद्धानुसार भेज सकते है।

–: पोथी यजमान के लिये संपर्क :–

श्री. कमलजी भांगडिया– 9346210668

श्री. हनुमानजी - 9420131000

–: निवास व्यवस्था के लिये संपर्क :–

श्री. ओमप्रकाशजी मारु - 9377823047

कु. साक्षी अग्रवाल - 7977766477

Email: sakshiagarwal@live.in

ब्रह्मासावित्री वेदविद्यापीठ, पुष्कर

संत निवास लोकार्पण समारोह सम्पन्न

देवादिदेव भगवान् महामृत्युञ्जय महादेव की कृपा से विद्यापीठ द्वारा चल रहा 'वेदसेवा' कार्य निर्विघ्नपूर्वक सकुशल चलते हुए निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। विद्यापीठ में नव निर्मित 'सन्त निवास, अतिथि-निवास एवं आचार्य-निवास' का लोकार्पण समारोह ९ दिसम्बर २०१८ रविवार को प.पू. आचार्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व ८ दिसम्बर २०१८ शनिवार को वेदमूर्ति आचार्य श्री राधेश्याम जी पाठक के आचार्यत्त्व में विद्यापीठ के गुरुजनों द्वारा 'वास्तु-शान्ति' की गयी, जिसके मुख्य यजमान विद्यापीठ के उपाध्यक्ष -श्री राम अवतार जी जाजू सपरिवार रहे।

९ दिसम्बर २०१८ को प्रातःकाल १० बजे पूज्य महाराज श्री ने शिलालेख अनावरण कर उक्त तीनों भवनों को लोकार्पित किया।

आशीर्वचन हेतु मंचीय कार्यक्रमों के प्रारम्भ में सस्वर वेदमन्त्रपाठ, दीपप्रज्ज्वलन एवं सरस्वती पूजन किया गया। इससे बाद श्री आनन्द जी राठी (अध्यक्ष), श्री राम अवतार जी जाजू (उपाध्यक्ष), श्री अशोकजी कालानी (कोषाध्यक्ष), श्री संदीपजी झंवर (सचिव), श्री ज्योतिजी माहेश्वरी (जयपुर), श्री श्यामजी दरगड (किशनगढ़), श्री रविजी तोषनीवाल (अजमेर), श्री जगदीशजी (भीलवाड़ा), श्री कैलाशजी बियाणी (मुम्बई), श्री पुष्करजी गोयल (मुम्बई), एवं श्री मनोजजी लढ्ढा (मुम्बई) आदि महानुभावों ने पूज्य महाराजश्री को माल्यार्पण कर आशीर्वाद ग्रहण किया।

पूज्य महाराजश्री ने अपने आशीर्वाचन में वेदों का महत्त्व बताते हुए कहा कि वेद साक्षात् नारायण के स्वरूप हैं। अतः वेदसेवा साक्षात् भगवान् नारायण की सेवा है। जो निःस्वार्थ भाव से उस वेदमय नारायण की सेवा करता है, उसके जीवन में कभी भी किसी चीज की कमी नहीं रहती है। वेद हमारे मूल-प्रमाण हैं। जो वेद को नहीं मानता वह नास्तिक है- नास्तिको वेदनिन्दकः। वेदों की प्रामाणिकता में कोई सन्देह नहीं है। वेद पढ़ने वाले हमारे वैदिक विद्वान भारतीय संस्कृति के सॉफ्टवेयर हैं।

महाराजश्री ने विद्यापीठ के कार्य पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि इसी तरह से यहाँ के न्यासी महानुभाव विद्यापीठ के विकास में तन-मन-धन से निरन्तर सहयोग करते रहें तो बहुत जल्द ही यह विद्यापीठ गुरूकुल-शिक्षा प्रणाली में यजुर्वेद के शाखोपशाखाओं एवं वेदांगों का देश में सर्वोपरि विद्यापीठ होगा।

– डॉ. ब्रिजबिहारी पाण्डेय

समता की मिसाल जयसिंगपुर, गीता परिवार

दिनांक २६ से २९ नवम्बर के दौरान गीता परिवार, जयसिंगपुर द्वारा विघ्नहर्ता श्री गणेश कथा का भव्य आयोजन किया गया इस आयोजन को केवल अध्यात्मिक न रखकर शैक्षणिक उपक्रमों से भी जोड़ा गया प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के १७०० छात्रों के लिए योगसोपान भाग – २ का भी प्रदर्शन हुआ, इस उपक्रम की तैयारी लगभग ६ महीने पूर्व से ही आरंभ कर दी गई थी। सभी बालकों एवं कार्यकर्ताओं ने इस उपक्रम को यशस्वी बनाने हेतु कठोर परिश्रम किया। इसके साथ–साथ शहर के युवक–युवतियों के लिए पूज्यवर गुरुदेव की अमोघ वाणी द्वारा 'आप ही अपने जीवन के निर्माता' यह व्याख्यान संपन्न हुआ। गणेश कथा के दौरान संत पूजन व आशीर्वाद का भी कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें महाराष्ट्र के अनेक संतो का पाद्यपुजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उल्लेखनीय है कि गत १८ महीनों पूर्व गीता परिवार, जयसिंगपुर द्वारा दत्तक पालक योजना का आरंभ किया गया। इस शिष्यवृत्ति योजना का लाभ लेने वाले छात्र प्राय: आर्थिक दुर्बलता से ग्रसित, समाज से वंचित तथा पिछड़ी जातियों के ही हैं किन्तु गीता परिवार इन सब बालकों का पालक बना और विद्यालयीन शिक्षा के साथ–साथ संस्कारों का रोपण भी गत १८ वर्षो से दिया जा रहा है। इन बालकों हेतु नियमित संस्कार व शौर्य वर्ग लिए जाते हैं। इस संस्कार वर्ग के परिणाम स्वरुप बालकों ने भगवद्गीता के कुछ अध्याय एवं लाठी चलाना, योग सोपान इत्यादि गीता परिवार के अनेक उपक्रमों का लाभ लिया है।

इन सभी उपक्रमों का प्रदर्शन जब पूज्य गुरुदेव के सामने किया गया तो गुरुदेव स्वयं इन बालकों को देखकर अत्यंत प्रभावित हुए एवं इन सबको अपने पास लेकर सबको मातृवत प्रेम दिया। इन सब वंचित बालकों को जब गुरूजी प्रेम कर रहे थे तो मेरी आँखों से झर–झर पानी बह रहा था मेरी आँखों के सामने निरंतर मानस का वह प्रसंग घूम रहा था, जब ऋषि वशिष्ठ निषादराज गुह को गले लगाते हैं, उस समय गोस्वामी तुलसीदास जी एक चौपाई लिखते हैं

एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं।
बड़ बसिष्ठ सम को जग माही।।

मुझे बार–बार इस चौपाई का स्मरण हो रहा था बड़े ही सौभाग्य की बात है कि हमें ऐसे सद्गुरु मिले जिनकी कथनी और करणी में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं है। इस प्रसंग के अनुसार पूज्यवर ने एक गीत में लिखा है– **'हो सर्व भेद विलीन समरस जागती राष्ट्रीयता।'** आप स्वयं आज इन बालकों की जातीयों के भेदभाव विस्मृत कर ऋषि वशिष्ठ के समान सबसे आसानी से मिल रहे थे। सभी बालक पूज्य गुरुदेव का इतना प्रेम पाकर अत्यंत गदगद हो रहे थे। आज समता प्रत्यक्ष दर्शन दे रही थी।

इसी कथा के अंतर्गत बुधवार दिंनाक २८ नवम्बर को पूज्य गुरुदेव के कर कमलों द्वारा दासी को धर्म सेवा प्रसाद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार का संपूर्ण श्रेय पू. गुरुदेव की कृपा के साथ–साथ मेरे प्रेरणास्थान आदरणीय संजू भैय्या, जयसिंगपुर गीता परिवार के समस्त कार्यकर्ता एवं मेरी कन्या स्वरूपा, सरिता और प्रिया हैं।

– श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी

वेदाध्यापक चिंतन शिविर सम्पन्न!

ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ, पुष्कर (राजस्थान) में त्रि-दिवसीय 'वेद अध्यापक चिंतन शिविर' संपन्न हुआ था। उस प्रेरणादायी शिविर के बाद यह शिविर महाराष्ट्र के संगमनेर में दि. ११ नवम्बर से १३ नवम्बर २०१८ को संपन्न हुआ। पू. स्वामीजी का इन दोनों शिविरों में पूरा एवं प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। अपने ३४ वेद-विद्यालयों से आये ६० से अधिक माननीय अध्यापक एवं अन्य साथी गण जो आये थे- सभी, अपना जीवन वेद समर्पित बनाये रखने हेतु द्विगुणित उत्साह से भर गये।

यह शिविर 'ध्रुव एकेडेमी संगमनेर', के मनोरम्य एवं शांत शैक्षणिक संकुल में रखा गया था। ध्रुव एकेडेमी के प्रमुख एवं संचालक श्री संजय जी मालपाणी, जो गीता परिवार के भी राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष हैं, उनकी माताजी एवं बंधु के साथ उपस्थित रहे। इस शिविर की शुरुआत में ही पू. स्वामीजी ने श्री. संजय जी के स्व. पिता श्री ओंकारनाथ जी के वेद प्रेम एवं वेद कार्य में दिए सहयोग को हृदय से याद किया।

शिविर में वेद शब्द-रक्षणार्थ और वेद अर्थ रक्षणार्थ विषय पर बहुत अच्छा मंथन हुआ। श्री महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान से प्रेम करने वाले महानुभावों ने अपने अपने विचार रखे। सभी अध्यापक भी अपने विचार ठीक तरह से रख सकें इसलिए पर्याप्त समय दिया गया। २० से अधिक अध्यापकों ने अपने मनोगत खुले हृदय से पू. स्वामी जी के चरणों में रखे। पू. स्वामीजी ने भी, जब-जब जो-जो विचार रखे जाते थे, उस विचार के प्रत्युत्तर में उसी समय अपना ज्ञानपूर्ण, तर्कपूर्ण और प्रेरणादायी मार्ग दर्शन दिया। पू. स्वामीजी के मुखारविंद से सहज निसृत आशीर्वाद अपने आप में एक अमृतधारा थी। इस अमृत की कुछ बूँदे इस प्रकार हैं-

(१) अध्यापक को सदा यही लगते रहना चाहिए कि मेरे ज्ञान का सतत् विस्तार होता जाये, मेरी पढ़ने की ललक हमेशा बनी रहे, मैं आजीवन छात्र बना रहूँ। (२) मैं मेरे छात्रों को पढ़ाने हेतु हमेशा लालायित रहूँ। (३) अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में आने वाले कष्टों को झेलने की मेरी क्षमता बनी रहे। (४) मैं यह सातत्य से देखता रहूँ कि मेरा प्रत्येक आचरण - धर्म, शास्त्र एवं परंपरा के अनुकूल ही हो। (५) मैं समाज से सामंजस्य रखूँगा, समाज में चल रहे अच्छे कार्यों में अपना सहयोग दूँगा और अच्छे कार्यों को समाज के सामने सराहता रहूँगा। (६) मैं काया, वाणी एवं मन से - किसी भी प्रकार के समाज के विरोध में एक शब्द भी नहीं बोलूंगा। (७) मैं मेरे साथी अध्यापकों के साथ प्रेम से रहूँगा। अध्यापकों के साथ हो रही यह मेरी आनंदयात्रा है ऐसा समझूँगा। एक-दूसरे के प्रति किसी प्रकार की द्वेष भावना नहीं रखूँगा।

(८) हम सब अध्यापक वाणी और मन से एक ही स्वर से रहेंगे और हम सबका ध्येय भी एक ही रहेगा। (९) हम वेद के आचार्य अपनी जीवन आहुति से भारत का स्वर्ण युग फिर से लाएँगे। (१०) हम विद्याव्रताचार्य बनेंगे। (११) वेद के शब्द, अर्थ एवं सिद्धांत रक्षणार्थ हम षडंग का अभ्यास करेंगे, छात्रों की इसमें रुचि बढ़ायेंगे और छात्रों को भी इस विषय में पारंगत करेंगे।

तीन दिन का यह शिविर वास्तव में अर्थपूर्ण रहा। सभी अध्यापक एवं साथियों ने एक तृप्ति की भावना लिए अपने-अपने वेद विद्यालयों में जाने हेतु उत्साह के साथ प्रस्थान किया।

महेश 'ध्रुव'

वेदाध्यापक चिंतन शिविर, एक दृष्टिकोण

विक्रम संवत् कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित वेदाध्यापक चिंतन शिविर में परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज की पावन उपस्थिति तथा महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के समस्त अध्यापकों समेत देश भर से चारों वेदों के मूर्धन्य विद्वानों ने अपनी-अपनी अहम भूमिका निभाई, इस चिंतन चर्चा में उपस्थित श्री संजयजी मालपाणी, श्री दत्तात्रयजी काले सर, माननीय रवींद्र जी मुले, वे. मू. अभय पाठक गुरुजी, श्री पलस्कर गुरु जी, श्रीमती ललिता मालपाणी जी समेत भारत वर्ष से गणमान्य और सम्माननीय व्यक्तियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर सभा का श्रीगणेश किया, जिसमें वे.मू. श्री. रामरूप गुरुजी के नेतृत्व में सामूहिक सूर्य नमस्कार एवं परमपूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में ध्यान और योग सभा समेत विशेष दिनचर्या का पालन किया गया। तत्पश्चात श्री महेश जी नंदे गुरुजी द्वारा वेदाध्यापक चिंतन शिविर के उद्देश्यों से अवगत करवाया गया।

वेदाध्यापक चिंतन शिविर के महत्वपूर्ण विषयों के मध्य परम पूज्य स्वामी जी द्वारा रचित - **'मंगल आरती चतुर्वेद की'** यह चतुर्वेद आरती एवं वेदाचार्य गीत को स्वामीजी ने स्वयं रागबद्ध कर इसे लोकार्पित किया।

हम जागृत आचार्य वेद के, अपना धर्म निभाएंगे।
जीवन आहुति से भारत का, सुवर्ण युग फिर लाएंगे।।
वन्दे वेदमयम्, भारत विश्वगुरुम्...

परमपूज्य स्वामीजी ने इन पंक्ति सूत्रों द्वारा वैदिक आचार्यों पर अमृत सिंचन करने का हर सम्भव मार्गदर्शन किया है।

'चरित्र शिक्षा सारे जग को जीवन से हम देते थे' बिल्कुल देते थे। और आज हमारे कमजोर होने का कारण है कि हम स्वयं वैदिकता कि ओर से पाश्चात्य कि ओर कदम बढ़ा रहे हैं, जिसमें केवल और केवल अर्थ, काम, भोग, और विलास है, हम उस ओर जा रहे है जिस ओर हमे शारीरिक सुख प्राप्त होता है। लेकिन संस्कार, चरित्र और शिक्षा से हम पतित होते जा रहे हैं। परम पूज्य स्वामी जी द्वारा कहे गए इन सूत्रों का हम अनुसरण करें तो निश्चित ही भारत में फिर से सुवर्णयुग की स्थापना कर सकते हैं।

हम वेदों का अध्ययन करके गहन खोज करेंगे तो हमारे सभी समस्याओं का हल मिल जाएगा, और ये कार्य हमें मिलकर ही करना होगा, इस ध्येय को ध्यान में रखते हुए पूज्य श्री ने इस शिविर का आयोजन किया है, जिसके तहत हमारे मन को कचोट रहे कई प्रश्नों के स्वतः समाधान मिल गए, तथा चिंतन - अध्ययन हेतु कई प्रश्न भी हम सबके समक्ष उपस्थित हो गए, जिनका हमे निरंतर चिंतन और स्वाध्याय करने से ही उत्तर प्राप्त हो सकता है, इसलिए स्वामीजी तीनों दिन के कार्यक्रम में एक ही सूत्र बार-बार दोहरा रहे थे **स्वाध्यायान्मा प्रमदः। सत्यं वद धर्मं चर। सत्यवचनम नाम अतिमुख्यं तपः । सत्यान्नास्ति परं तपः । सत्यमेव परं तपः । अतः सत्यमेव वक्तव्यम् धर्माचरणम् नाम अहिंसा। जपशमदमादयः । ते च धर्मस्य रूपान्तराणि । धर्म एव सदा अनुष्ठेयः, न कदापि अधर्मः स्वाध्यायो नाम वेदाध्ययनम् । एतानि कर्तव्यान्येव ।**

परम पूज्य स्वामी जी का व्यक्तित्व लिखना या उनपर कोई समीक्षा करना तो सूर्य को दिया दिखाने जैसा है, भारतीय सभ्यता एवं वैदिक परंपरा की पुनः स्थापना हेतु जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के भांति परम

ध्रुव अॅकॅडमी में चल रहे वेद अध्यापक शिविर के आरंभ में स्वामी जी स्व. श्री ओंकारनाथजी मालपाणी का स्मरण करते हुए निःशब्द हो गए, उनकी निःशब्दता ने स्व. मालपाणी जी के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण परिचय दे दिया। एक अनुभव मैं स्वयं पाया हूँ कि स्वामी जी यदि स्वयं किसी को निःशब्द होकर स्मरण करते हैं उस व्यक्ति का व्यक्तित्व सदैव हमारे लिए अनुकरणीय होता है।

इन्ही व्यक्तित्वों के आधारभूत यह सम्पूर्ण संसार वैदिक सभ्यता से अपेक्षारत है, संसार को पता है कि जिसके व्यक्तित्व पर चर्चा हो वो निश्चित ही वैदिक समाज से ही होगा, संसार हमारा आचरण, हमारा व्यवहार, हमारी दिनचर्या, हमारा संवाद और हमारी वाक्पटुता का सदैव अनुकरण करता आया है। इसलिए हम वैदिकों को संसार मे कभी गलत संदेश नहीं देना चाहिए, समाज के प्रति हमारा व्यवहार अत्यंत सरल और योग्य होना चाहिए, समाज के किसी सामाजिक अनुष्ठान का कतई विरोध नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार यदि वैदिक समाज संसार मे होनेवाले सांसारिक उपक्रमों के साथ –साथ वैदिक परंपरा का निर्वाह करता है तो समाज वैदिकों को गुरु मानकर उनका अनुशरण करने लगता है, गुरुकुलों को संस्कार और शिक्षा का केंद्र मानने लगता है, वेदाध्यापक को समाज का अभिन्न अंग मानने लगता है।

पू. स्वामीजी ने कहा, हम अध्यापकों को अपने परिवार, अपने छात्र और अपने विद्यालय तक सीमित रहने वाली संकीर्ण भावनाओं से दूर रखना है। हमें समाज की ओर सदैव अग्रसर होते रहना है, ताकि समाज मे वेद और संस्कार के प्रति आस्था बनी रहे।

इस प्रकार से वैदिक सम्पूर्ण विश्व का आभूषण बन जाता है **वैदिकोविश्वभूषणः।** इस प्रकार अध्यापक चिंतन शिविर को देखकर अथर्ववेद में कहे, मंत्र का मुझे स्मरण हुआ।

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि।
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः।।

सभा, समाज, संगठन बनाकर कार्य साधना कोई नया आयोजन नहीं है, अपितु यह अत्यन्त पुराना है, इतना पुराना कि जबसे मनुष्य इस संसार की रंगस्थली पर आया है। जिस संघ या व्यक्ति ने अपने प्रतिनिधि चुनकर सभा में भेजा हैं, वह मानो कह रहा है – **'विद्म ते सभे नाम'** हे सभे ! हम तेरा नाम (यश) जानते हैं सभा में बैठने योग्य को 'सभ्य' कहते हैं, 'सभ्य' के चालचलन को 'सभ्यता' कहते हैं। सभ्यता संगठन के बिना नहीं हो सकती। सभा का एक अर्थ है प्रकाशयुक्त, अर्थात सभा एक ऐसे जनसमुदाय को कहते हैं जिसमें सब मिलकर ज्ञानपूर्वक और ज्ञानरक्षक कार्य करते हैं। छिपकर अन्धकार में कार्य नहीं करते। इसीलिए आगे कहा है– **'नरिष्टा नाम वा असि'** तू सचमुच नरहितकारी है इसलिए वेदध्यापक चिंतन शिविर जैसे सभा का अयोजन होते रहना चाहिए जिसमें वैदिक संविधान के विषय में चर्चा की जाए और इस मानव निर्मित निराधार संविधान को खत्म करके पुनः शांति, शौर्य और वैदिक सनातन की स्थापना की जाए। और इस भागदौड़ भरे युवाओं के जीवन में कुछ नए मार्ग निर्माण किये जायें ताकि सबमें समानताएं बनाई जा सके। भारत सहित अन्य देशों में भी वैदिक आधुनिक संविधान को अपनाकर आतंकवाद, नक्सलवाद, साइबर क्राइम, चोरी, डकैती इत्यादि से निज़ात पाई जा सके, और सम्पूर्ण विश्व को वैदिक संविधान के द्वारा एक उचित और व्यापक व्यवस्था दी जाए, ताकि कर्म, संस्कार की भावनाएं व्याप्त हों और अज्ञानता, काम–वासना, राग, द्वेष और प्रतिशोध की भावनाएं समाप्त हो सके।

इस शिविर में उच्चारण की विविधता एवं

भ्रांतियों पर श्री. मुले जी के साथ चर्चा में मंचस्थ पूज्य देशिक कस्तूरे गुरुजी, वे.मू.श्री. अभय पाठक गुरुजी, वे.मू. राधेश्याम पाठक गुरुजी, वे.मू.श्री चन्द्रभानु शर्मा गुरु मंडलियों ने समुचित और सप्रमाण चर्चा की।

इस चर्चा के द्वारा हमारे समक्ष एक ही शाखा के दो पृथक-पृथक उच्चारण परंपरा का बोध हुआ जिसमें प्रथम वे. मू. श्री. गोडसे गुरु जी परंपरा एवं दूसरी वे. मू. श्री महादेवशास्त्री गुरु जी परंपरा। इन दोनों परम्पराओ में वेद संरक्षण का कार्य दो अलग-अलग प्रारूपों में किया जाता है। ये दोनों ही परंपराएं एक दूसरे के अभिन्न अंग है, जिसमें श्री गोडसे गुरु जी परंपरा में वेद को संहिता के साथ-साथ पद, क्रम और घन का सुयोग्य ढंग से अध्ययन कराया जाता है और श्री महादेव गुरु जी की परंपरा में वेद संहिता के साथ-साथ शतपथ ब्राह्मण, याज्ञवल्क्य शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा, प्रातिसांख्य इत्यादि वेदांग ग्रंथो का समुचित अध्ययन कराया जाता है।

आधुनिक समय में चल रहे गुरुकुल परंपरा सदियों पूर्व चलती परंपरा से अत्यधिक भिन्न हैं, तब से आज के विचारों में भिन्नता, स्वभाव में भिन्नता और संस्कार में भी भिन्नता है, विद्यार्थियों में समर्पण भाव तो बहुत ही अल्पमात्रिक रह गया है, तब के शिष्य गुरुकुल में जाने के पश्चात अपने आप को गुरु के समर्पित कर दिया करते थे, भिक्षाचारण करते थे, ईंधन हेतु जंगल से लकड़ियां चुन-चुन कर लाया करते थे और पूर्ण निष्ठा से अल्प समय मे ही वेद वेदांत में पारंगत हो जाते थे। इन सबका मूल कारण है कि जो विद्यार्थी किसी भी भीषण परिस्थिति में अपने अध्ययन को पूर्णता कि ओर ले जाता है वही सुलभता से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

आज के आधुनिक युग में गुरुकुल कि तो बात ही क्या करें, कोई ब्राह्मण अपने पुत्र को वेद पढाना तक नहीं चाहता है, गीता रामायण भागवत आदि अनुकरणीय पुस्तकें वृद्धों के कक्ष तक ही सिमट गए हैं , सबमें होड़ लगी है इंजीनियर बनने की, डॉक्टर बनने की, अब कड़वे संच में कहूँ तो वेद केवल गरीब ब्राह्मणों के बालकों का हीं विषय बनकर रह गया है। अब इसे समय की बिडम्बना कहेंगे या संस्कार का पतन।

आज के विषम परिस्थिति में भी हम अध्यापकों की दृढ़ मानसिकता वैदिक मौखिक परंपरा को और अधिक सुदृढ़ और अग्रणी बनाए रखने की है। अतएव वेदविद्या को अग्रेषित करने के लक्ष्य से उन विद्यार्थियों का लालन पालन भी ठीक उसी प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार हम अपने कंठस्थ किये मंत्रों को पोषित अथवा संरक्षित करते हैं, अपने स्मृतिगत मंत्रो की भांति यदि उन विद्यार्थियों का भी लालन पालन करें तो भी वैदिक सभ्यता को पुनः सर्वोत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

हमारा हर संभव यही प्रयास रहना चाहिए कि विद्यार्थियों के अध्ययनावधि में कोई विघ्न उत्पन्न ना हो, विद्यार्थियों को सुपाच्य और पौष्टिक भोजन मिले, मनोरंजन और खेल भी उन्हें उचित मात्रा में मिले, दिनचर्या में उनकी उपस्थिति हर संभव रहे, यदि कोई अश्वस्थ हो जाये तो उसे शीघ्र औषधी प्राप्त हो। इत्यादि पुत्रवत जिम्मेदारियां भी एक अध्यापक का दायित्व है। हम गुरु द्रोण, वशिष्ठ या विश्वामित्र तो नहीं बन सकते, लेकिन उनके प्रशस्त किये हुए मार्ग पर चलते हुए विद्यार्थियों को उत्कृष्ट अवश्य बना सकते हैं। श्री. सोमण सर ने स्वामी जी के द्वारा कहे गए मास्टर शब्द का यथार्थ अर्थ बतलाया– 'माँ–स्तर' एक उत्कृष्ट अध्यापक के भीतर माँ का स्तर रहता है, पिता का विवेक भी होता है, और गुरु का ज्ञान भी होता है वह मास्टर है।

तत्पश्चात श्रीमती भाग्यलता पाटस्कर जी ने भी संरक्षित वेदों के विषय पर चर्चा की एवं आधुनिक

काल मे वेदों पर हो रहे नित नए अनुसंधान के विषयों पर समीक्षा की। और विशेषतः ऋग्वेद काल से चली आ रही वैदिक परंपरा का उद्बोधन किया।

तदनंतर पूज्य स्वामी जी के शिष्य सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री. गिरिधर काले जी ने महर्षि महेश योगी संस्थान द्वारा वेदों से किये जा रहे आधुनिक जीव विज्ञान अनुसंधान पर प्रकाश डालते हुए हमारे प्रति समाज के तीक्ष्ण दृष्टिकोण को भी बताया, जो हमारे लिए अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि समाज में एक विडंबना हम वैदिकों ने स्वयं बनाई है, वेद पढ़ने वालों को समाज में पुजारी या कर्मकांडी के दृष्टिकोण से ही देखा जाता है। समाज में फैली इस भ्रांति को दूर करना हम वैदिकों का प्रयास होना चाहिए।

चिंतन शिविर समापन से एक दिन पूर्व श्री. संजय मालपाणी जी ने पढ़ने में कमजोर विद्यार्थियों को किस प्रकार से उन्हें पढ़ाया जाए, विद्यार्थियों के गलती करने पर उन्हें कैसे और कितना दंडित किया जाए, अध्यापकों का विद्यार्थियों के प्रति कर्तव्यों का कैसे निर्वाह हो ये सभी बातें विस्तारपूर्वक बतलाई।

समापन कार्यक्रम में पूज्य स्वामी जी द्वारा लोकार्पित चतुर्वेद आरती, तथा वेदाचार्य गीत गाया गया, तत्पश्चात श्री नंदे गुरु जी ने सभी का अति सरल और आकर्षण भरे शब्दों से धन्यवाद ज्ञापित किया। पूज्य स्वामी जी से सबका सम्मान करवाया।

– अभिजीत पाण्डेय
श्री कृष्ण वेदविद्यालय पानीपत

पूर्व कथा कार्यक्रम संकलन हेतु सूचना

प. पू. स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज (आचार्य श्री. किशोरजी व्यास) जी के अविरत लोकहितार्थ प्रवास से आप सभी परिचित है। केंद्रीय-कार्यालय, 'धर्मश्री' ने यह संकल्प किया है कि इन सभी कार्यक्रमों की यथासंभव परिपूर्ण सूचि का निर्माण किया जाय। स्पष्ट है कि यह किसी एक व्यक्ति के बस की बात नहीं है। अतः इस प्रदीर्घ कार्य हेतु आपसे सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

आज तक पूज्य स्वामीजी की पावन उपस्थिती में संपन्न छोटे बडे समस्त कार्यक्रमों की आपके पास जो भी जानकारी है उसे हम तक पहुँचाने की कृपा करें। संभव है कि आपको पूरी जानकारी न हो (जैसे वर्ष स्मरण में है परंतु आयोजक याद नहीं, अथवा आयोजक का पता है परंतु वर्ष अथवा कथाविषय (भागवत-रामायणादि) याद नहीं) फिर भी जितनी भी जानकारी है, हमें वह स्विकार्य है। अथवा ऐसी जानकारी रखनेवाले महानुभावों के नाम एवं संपर्क क्रमांक आप भेजते हैं तो वह भी बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा।

इस संकलन में हम ३,५,७,९,११ दिवसीय कथा-यज्ञ, व्याख्यान/प्रवचनमाला, किसी भी समारोह में प.पू. स्वामीजी का भाषण, उद्घाटन, ग्रंथ-प्रकाशन, भूमिपूजन, वास्तु-लोकार्पण, मंदिर कलशारोहण, श्रद्धांजलि-सभा आदि सभी कार्यक्रमों का समावेश करना चाहते हैं।

हमारा विश्वास है कि यह विराट कार्य आपके सहयोग के बिना संभव नहीं होगा। हमे यह भी ज्ञात है कि इस जानकारी के संकलन हेतु आपको कष्ट भी उठाने पडेंगे। परंतु इस कार्यका महत्त्व जानकर तथा प. पू. स्वामीजी के प्रति आपकी श्रद्धा के बलपर आप यह सहयोग करेंगे ये विश्वास है।

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम * ई. स. २०१९

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
०७-०१ से ११-०१	गुवाहाटी (आसाम)	श्रीकृष्णलीला कथा
१९-०१ से २६-०१	प्रयाग कुंभ (उत्तर प्रदेश)	(प्रात:) महाभारत कथा (श्रीगुरुकार्ष्णि-शिबिर)
२०-०१ से २६-०१	प्रयाग कुंभ (उत्तर प्रदेश)	(सायं.) हनुमान कथा (श्री जगन्नाथ धाम-शिबिर)
२७-०१ से ३१-०१	प्रयाग कुंभ (उत्तर प्रदेश)	महाभारत संदेश (जुना अखाडा-शिबिर)
३१ जनवरी	प्रयाग कुंभ (उत्तर प्रदेश)	गीता परिवार नाट्य प्रस्तुति पुण्य प्रवाह हमारा (रात्रि)
०५-०२ व ०६-०२	जबलपुर (मध्य प्रदेश)	देवी माहात्म्य
०७-०२ व ०८-०२	गोठमांगलोद (राजस्थान)	सहस्रचंडी यज्ञ-प्रवचन
०९-०२ व १०-०२	इंदौर (मध्य प्रदेश)	प्रवचन
१२-०२ से १८-०२	सोलापुर (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
१९-०२ व २०-०२	परभणी (महाराष्ट्र)	संत समागम
२०-०२ से २६-०२	सावरगाव, जालना (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
२७ फरवरी	आलंदी (महाराष्ट्र)	वेदविद्यालय वार्षिकोत्सव
०२-०३ व ०४-०३	पुष्कर (राजस्थान)	महाशिवरात्रि सत्संग
०७-०३ से ०९-०३	रमणरेती (मथुरा)	संत समागम
११-०३ से १९-०३	कांचीपुरम् (तमिलनाडु)	१०८ भागवत कथा
२२-०३ से २४-०३	अमरावती (महाराष्ट्र)	व्याख्यानमाला
२८-०३ से ०३-०४	अहमदनगर (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
०६-०४ से १४-०४	इगतपुरी (महाराष्ट्र)	देवी भागवत कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क :- धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे- 411016

कार्यालय दूरभाष :- (020) 25652589 / 08275066572

Website : www.dharmashree.org Email : dharmashree123@gmail.com

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०७/२०१८ से दिनांक ३०/०९/२०१८ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

औरंगाबाद: श्री. रामनिवासजी गट्टानी, **पुणे:** मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन, **लखनऊ:** श्री. बृजेंद्र स्वरूप, **पानीपत:** श्री. महेंद्र कुमार अग्रवाल

रु. ५० हजार से १ लाख

गुडगांव: श्रीमती लक्ष्मीदेवी, **सिल्लोड:** श्रीमती कांताबाई मानधने, **चेन्नई:** मे. जी.बी.आर. मेट्ल्स प्रा.लि., **तिरुपुर:** मे. जे. पी. क्लोदिंग प्रा. लि., **हाथरस:** श्री. गिरिधरलालजी लोहिया, **पुणे:** श्री. सौरभ मुंदडा, **यवतमाल:** डॉ. श्री. वसंतरावजी राशतवार,

रु. २५ हजार से ५० हजार

गुडगांव: श्रीमती कुसुम माहेश्वरी, **कोलकाता:** श्रीमती सुरुची चौधरी, श्रीमती आशादेवी साबू, **दिल्ली:** श्री. रविनारायण भार्गव, श्रीमती सुजाता शर्मा, **वालुर:** श्री. वसंतराव चौधरी, **चंद्रपुर:** श्री. मुकेशजी उपाध्याय, श्री. विनोदजी उपाध्याय, श्री. महेशजी उपाध्याय, श्री. विजयजी उपाध्याय, **अहमदाबाद:** श्री. सतीशजी देसाई,

रु. १० हजार से २५ हजार

नागपुर: सौ. अनघा बेंद्रे, **पुणे:** श्री. हृषिकेश तबीब, श्री. अर्जुन तबीब, कु. दुर्वा तबीब, श्री. संजीवजी कुलकर्णी, **बहादुरगड:** श्री. मुकेश गुप्ता, **विरार:** श्री. भारतजी नाईक, **अमरावती:** श्री. वीरेंद्र भट्टड, **चेन्नई:** श्री. रामजीवन मुंदडा, **सिकंदराबाद:** श्रीमती सरोज जोशी, श्रीमती रेखा अग्रवाल, **जयपुर:** श्रीमती प्रेमकला कालानी, श्री. विजयकुमारजी तोतला, **सोलापुर:** श्री. राजगोपालजी मिणियार, डॉ. श्री. विश्वनाथजी अय्यर, **दरभंगा:** श्री. शारदानंद झा, **दिल्ली:** श्री. श्यामलालजी कौशिक, श्री. सत्येंद्र मांगलिक, श्री. रविंद्रजी गौड, श्री. आदितजी सुनेजा, **मोदीनगर:** श्री. अंबरीशकुमार गुप्ता, **नागपुर:** श्री. अविनाशजी संगमनेरकर, **कोलकाता:** श्रीमती माधुरी राठी, श्री. के. एल. सोमाणी, श्रीमती उषा सोमाणी, श्री. महावीर प्रसादजी चांडक, श्रीमती प्रभादेवी चांडक, श्री. दीपेशजी चांडक, श्रीमती अदिती चांडक, श्री. हितेश चांडक, श्री. सरोज चांडक, श्री. अंकित चांडक, श्रीमती श्रद्धा चांडक, श्रीमती एशना चांडक, श्री. अनुज चांडक, श्रीमती भाग्यश्री चांडक, श्रीमती राधिका चांडक, श्री. दर्श चांडक, **सूरत:** श्री. पुरुषोत्तमदासजी मारु, **ऋषिकेश:** श्रीमती उमा सुलक्ष्मीशाह जनकल्याण न्यास, **नांदेड:** सौ. संध्या मुंदडा, **मउनाथ भंजन:** श्रीमती विमला ठरड, श्री. दामोदरलालजी ठरड, **भाईंदर:** श्री. आर. एस. इन्नानी, **मुंबई:** श्री. सुबोधकुमारजी साबू, सौ. मंजुषा मुंदडा, श्रीमती सरिता मित्तल, श्री. भागीरथजी लड्डा, **हैदराबाद:** श्री. पन्नालालजी भांगडिया, श्रीमती सरोजदेवी अग्रवाल, श्री. हणमंतराव कुलकर्णी, **धुलिया:** श्रीमती सुनंदा खैरनार, **अंबड:** श्री. सुभाषजी सोमाणी, **गंगाखेड:** श्री. गोपालदासजी तापडिया, **मोहाली:** श्री. अशोककुमारजी जसरोटिया

रु. ५ हजार से १० हजार

बेलगांव: श्री. आनंदजी हेरेकर, **पुणे:** श्री. स्नेहलजी लढे, श्रीमती नमिता सोमाणी, श्री. सुरेश गाडे, श्री. बंग कॅनव्हासिंग एजंसी, श्री. उमेश देवले, श्री. किशोर परवसे, श्री. अदितकुमार भोसले, श्री. नारायणजी बेहडा, श्रीमती सुमन मालपाणी, श्री. श्रीकांतजी जोशी, श्री. रामेश्वरजी मानधने, श्री. विजयजी आडकर, श्री. किशनलालजी राठी, श्री. राजस्थानी सी.व्ही.पी. मंडल, श्री. हरिकुमार नायर, श्री. संदीपजी वाणी, श्री. व्ही. व्यंकटरमणी, श्री. राधाकृष्णजी खुणे, श्री. गोपालजी खंडेलवाल, श्री. श्रीपादजी देशमुख, श्री. रश्मीकांत शाह, **दिल्ली:** श्रीमती नीता टंडन, श्रीमती उमा आहुजा, श्रीमती चंद्रकांता गुलाटी, श्री. आर. एस. बाजपेई, श्री. प्रणव अवस्थी, **बीड:** श्री. त्रिंबकदासजी झंवर, श्री. दिलीपराव देशमुख, **भुसावल:** श्रीमती शारदा चौधरी, **कोलकाता:** श्री. नीरजकुमार कजरिया, **अहमदपुर:** श्री. निखिल सिद्धांती, **तिरुपती:** डॉ. श्री. गिरिजाप्रसाद शडांगी, **निघोजे:** श्री. आशिश येलवडे, **पाटकुल:** श्री. दत्तात्रय मोहोले, **पवनानगर:** श्रीमती मोहिनीदेवी बोहरा, **बारामती:** श्री. वासुदेव फालके, **आलंदी:** श्री. राघवेंद्रजी धर्मट्टी, **नांदेड:** श्रीमती कुसुम चक्करवार, **नॉयडा:** श्रीमती शिल्पी मुद्गल, श्रीमती रिचिशा गुलाटी, **अंबाजोगाई:** श्री. लक्ष्मीकांतजी गंजेवार, **माजलगांव:** श्री. जनार्दनजी पटवारी, **रायबरेली:** श्री. महेशजी सिकरिया, **उस्मानाबाद:** श्री. बृजमोहनजी बांगड, श्रीमती चंद्रकला मुंदडा, **लखनऊ:** श्रीमती श्रेयसी डागा, श्रीमती इंदू रॉय, **मुंबई:** श्री. शरदजी गुप्ता, श्रीमती सरोज बलिया, **दोसा:** श्री. चांदमलजी सारडा, **जयपुर:** श्री. कृष्णमुरारीजी सारडा, **पानीपत:** श्री. हरिओमजी कौशिक, श्रीमती स्नेह दुआ, **नागपुर:** श्रीमती त्रिशा कटारिया, श्रीमती नेहा शर्मा, श्रीमती विमला शास्त्री, श्रीमती अलका इंदापवार, **औरंगाबाद:** श्रीमती कौशल्या चांडक, श्री. पी. आर. तोष्णीवाल, श्रीमती निर्मला मुंदडा, **किशनगढ:** श्रीमती मंजू टवाणी, **अहमदाबाद:** श्री. जगदीशजी पारीक, **कोलकाता:** श्री. गिरीशकुमारजी मोहता, श्री. हरिकृष्ण मोदी, श्रीमती विमलाबाई बागडी, श्री. अशोकजी झंवर, श्री. मोहनलालजी झंवर, श्रीमती पुष्पादेवी झंवर, श्री. नंदगोपालजी माहेश्वरी, श्रीमती शकुंतलादेवी माहेश्वरी, श्री. देवेंद्रकुमारजी माहेश्वरी, श्रीमती मनोरमादेवी माहेश्वरी, श्रीमती विजयादेवी माहेश्वरी, श्री. अमृत माहेश्वरी, श्रीमती राणू माहेश्वरी, श्री. यशवंतकुमार माहेश्वरी, कु. मंजरी माहेश्वरी, श्री. अमिताव यादव, श्रीमती आशा यादव, श्री. पुलकित माहेश्वरी, **तेल्हारा:** सौ. ज्योती राठी, **सूरत:** सौ. यशोदा मारु, **यवतमाल:** श्रीमती कमलादेवी पांडे, **जबलपुर:** श्रीमती सुशीला गुप्ता, **सेलू:** श्री. श्यामजी चौधरी, **भीलवाडा:** श्री. बन्सीलालजी सोडाणी, श्री. शांतीलालजी पोरवाल, **परभणी:** श्री. रामचंद्रजी मणियार, श्री. सुधाकरराव देशपांडे, **छिंदवाड:** श्री. नरेंद्रजी शर्मा, **राजाजीपुरम:** श्री. दुर्गाप्रसादजी मिश्रा, **उडुपी:** श्री. रत्नाकरजी शेणॉय, **सुजानगढ:** श्री. हीरालालजी गोदारा, **गाझियाबाद:** श्री. गोपालचंद्रजी गोविल,

श्री. विजयजी कुलकर्णी आशीर्वाद लेते हुए

वेदाध्यापक चिंतन शिविर, संगमनेर

आलंदी वेदविद्यालय में डॉ. शंकर अभ्यंकर

उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मान, सौ. संगीता जाधव

छात्र सम्मान, गणेश कथा, जयसिंगपुर

श्री. रवींद्रजी गुर्जर, को धर्मश्री पुरस्कार

'DHARMASHREE' Periodical - Quarterly
Posted under P.O. Clause No. 129 Regn. No. MAH/HIN/2001/4041

सुदिनं सुदिनं जन्मदिनं तव
भवतु मंगलम् जन्मदिनम् ।।

प.पू. गुरुदेव को
७० वें प्राकट्य दिवस पर कोटिश: प्रणाम एवं बधाई।

२५ जनवरी २०१८ षट्तिला एकादशी, १९४०

नमो गोविंददेवाय ज्ञानदेवस्वरूपिणे ।
वाग्मिने वाङ्निधानाय यतये वेदमूर्तये ।।

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना, पुणे में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे – ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया । संपादक : डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण । सदस्यों के अतिरिक्त प्रसाद – मूल्य प्रति अंक रु. ५/– मात्र